नरक विजय

योगेन्द्र पाठक 'वियोगी'

एहि नाटकक एक संस्करण हमर पोथी 'त्रिनाटकम्' मे छपि गेल अछि। ओहि मे दृश्यक संख्या बहुत बेसी रहला सँ किछु निर्देशक लोकनि एकर मंचन पर प्रश्न चिन्ह लगौलनि। ओहि आलोचना कें ध्यान मे रखैत एकरा परिवर्धित कएल गेल। एकर बंगला अनुवाद श्री नवीन चौधरी केलनि अछि।

पात्र परिचय

मानव पात्र – रमेश, सुरेश, अनुपम अमित (वैज्ञानिक)

पौराणिक पात्र – ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, यमराज, चित्रगुप्त, दू यमदूत

अंक 1

दृश्य 1

पर्दा उठबा सँ पहिने नेपथ्य मे घोषणा होइत अछि --

आजुक टटका खबरि सुनू। दुर्दान्त बाहुबली रमेश आ सुरेश अपन शीर्ष राजनीतिक संरक्षक लोकनि कें जलसा मे बजाए बड़ी राति तक नाच गान भेलाक बाद बेहोसीक अवस्था मे पाँच गोटेक दनादन हत्या कऽ देलनि। तकर बाद कृत्रिम बुद्धि आ साइबोर्गक क्षेत्र मे अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त वैज्ञानिक अनुपम अमितक अपहरण सेहो केलनि।

पर्दा उठैत अछि। बीच मे उपर टाँगल अछि एकटा डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड, जे एखन स्विच-ऑफ अछि। मंच पर एक कोन मे टेबुल पर कम्प्यूटर, इलेक्ट्रॉनिक यंत्र, किछु Do-It-Yourself (DIY) किट, किछु तार, सोल्जरिंग आयरन, अन्य उपकरण आदि अस्त व्यस्त दशा मे राखल। दोसर कोन मे टेबुल पर अनेको शास्त्र पुराणक मोट मोट पोथी सब सजाओल। मंचक बीच मे कने आगू दिश तीनटा कुर्सी राखल। कुर्सीक सामने छोट टेबुल पर जलक बोतल आ गिलास। बीच बीच मे नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि।

वैज्ञानिक अनुपम स्लीपिंग सूट पहिरने छथि। वयस साठिक धक। चेहरा पर औंघाएल आ थाकल हेबाक भाव। हुनका बन्हने रमेश आ सुरेशक प्रवेश। रमेश आ सुरेश दूनू प्रायः पचास-पचपनक वयस, बेस गठल शरीर, खाकी ड्रेस, मुह गमछा सँ झाँपल, दूनूक हाथ मे पिस्तौल छनि। प्रकाश वैज्ञानिकक चेहरा पर फोकस रहैत अछि आ जेना जेना ओ मंच पर आगू अबैत छथि, तेना तेना हुनका संग चलैत अछि। मंचक बीच पहुँचला पर पूरा मंच प्रकाशित होइत अछि। रमेश हुनकर बन्हन खोलैत छथि। सुरेश हुनका एक गिलास जल पीबै लेल दैत छनि। दूनू अपन मुहक गमछा खोलैत छथि)

वैज्ञानिक *(जल पीबि, घबराएल)* हमरा किएक अपहरण केलहुँ ?

सुरेश *(कुर्सी दिस इसारा करैत)* पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ सर। *(एक एक कए तीनू गोटे बैसैत छथि, दूनू बाहुबली अपन पिस्तौल टेबुल पर रखैत छथि।)*

रमेश घबरेबाक कोनो बात नहि सर, अपने आराम सँ बैसियौ। अहाँ सँ ने कोनो फिरौती लेब आ ने कोनो तरहक कष्ट देब। अहाँ तऽ हमरा सबहक पूज्य छी आ देशक गौरव। अहाँक सुरक्षा हमरो सब लेल बहुत जरूरी अछि। किछु गप सप केलाक बाद अहाँ कें एखनहि आपस पहुँचा देब।

नेपथ्य मे जंगली जानवर सबके शब्द सुनाइ पड़ैत अछि। वैज्ञानिक अकानैत छथि।

वैज्ञानिक हम सब जंगल मे छी की ?

सुरेश जी सर, एतए एकान्त मे अहाँ कें लऽ अनलहुँ मात्र अपन प्रोजेक्ट बुझबै लेल। हमरा सबहक प्रसिद्धिए तेहन भऽ गेल अछि जे अहाँक ऑफिस मे जाकए विजिटिंग कार्ड देखा कए गप नहि ने कऽ सकैत छलहुँ। तें अपहरणक नाटक करए पड़ल।

वैज्ञानिक *(चेहरा पर शांत भाव अनैत)* एतए अहाँ सब कें पुलिसक डर नहि अछि ? एतेक पैघ कांड भेला पर पुलिस अहाँ सब कें चारू कात तकिते होएत ने।

रमेश चिन्ता नहि सर। पुलिसकें रस्ते देखल नहि छैक आ यदि रस्ता भेटियो जेतैक तऽ आएल नहिए पार लगतै।

सुरेश रस्ता पर पैघ गड्ढा बनाओल छैक जे हरदम पानि सँ भरल रहैत छैक। हम सब जखन आबऽ लगैत छी तऽ मोबाइल के रिमोट कन्ट्रोल द्वारा पानि उपछै लेल पम्प चला दैत छिऐक। आबि गेला पर फेर ओहि मे पानि भरि जाइत छैक। बहुत सुरक्षित छैक ई जगह सर।

रमेश एकटा बात आर छैक सर जे अपने कें हमरा सबहिक विषय मे आश्वस्त करत।

सुरेश पुलिस हमरा सब कें जीवित अवस्था मे कहियो नहि पकड़ि सकत। यदि कोनो असावधानी सँ कहियो घेराइयो जाएब तऽ पुलिस कें मृत शरीरे भेटतैक।

वैज्ञानिक ठीक छैक, जल्दी अपन योजना कहल जाओ।

रमेश देखियौ सर, एतेक दिनक अपराध यात्रा मे हम सब बहुत पाप केलहुँ। एतेक तरहक पाप जकर वर्णन शास्त्र पुराण मे भेटबो नहि करत।

सुरेश हम सब एहि बीच शास्त्र पुराण सबके अध्ययन सेहो केलहुँ, मृत्यु उपरान्त स्वर्ग नरक भोगक जानकारी सेहो लेलहुँ। देखियौ ओ पोथी सब *(कोन दिस इंगित करैत छथि)*

वैज्ञानिक *(कने मुस्किआइत)* अच्छा !

रमेश आइ हमरा दूनूक आत्मा कें अपूर्व शान्ति भेटि रहल अछि जे ओहि पाँचो पपियाहा दुष्टात्मा सब कें यमलोक पहुँचा देलियैक। एही दुष्ट राजनेता लोकनिक कारण हम सब अपराधक संसार मे घुसिया गेलहुँ। हमरा सबके आपराधिक जीवन एतहि शेष होइत अछि।

वैज्ञानिक किन्तु अहाँक अपन कएल पापक दंड तऽ अहीं सब भोगबै। राजनेता सबके हत्या सेहो एहि पापक कड़ी मे जोड़ा गेल ने।

सुरेश पापक प्रायश्चित्त करबाक लेल हम दूनू किछु अभिनव तरीका सोचने छी। एहि शरीरें तऽ अपराध छोड़ियो देला पर समाज हमरा दूनू कें स्वीकार नहिए करत। आ फेर कानूनी प्रक्रिया सेहो छैक।

रमेश ओही प्रोजेक्टक लेल अपने सँ विमर्श करबाक अछि।

सुरेश आब हम सब एक विशेष अभियान पर जाए चाहैत छी। एहि लेल हम सब अपना संग किछु चीज लऽ जाए चाहैत छी जे एतुका वैज्ञानिक आविष्कारक अभिनव नमूना होइक। ओही लेल अहाँक मदति चाही। हमर ई लिस्ट देखि लेल जाओ सर। *(एकटा कागतक टुकड़ी हुनका दैत छथि)*

वैज्ञानिक *(लिस्टक अध्ययन करैत)* समय आ खर्च दूनू बेस लागत।

रमेश ओकर चिन्ता नहि। एकटा आर अनुरोध अछि, एकरा देखियौ सर *(दोसर कागत बढ़बैत छथि।)*

वैज्ञानिक मुदा अहाँ सब बुतें कोना पार लागत ?

सुरेश हम फीजिक्स मे एम.एस-सी. छी आ हमर सहयोगी इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियर छथि। ई तऽ नियतिक दुश्चक्र जे हम दूनू अपराध जगत मे आबि गेलहुँ। नहि तऽ कोन ठेकान आइ अहींक प्रयोगशाला मे सहायक भेल काज करैत रहितहुँ।

रमेश समय निकालि हम सब अहाँक टीम द्वारा कएल जा रहल वैज्ञानिक अनुसंधान आ आविष्कारक जानकारी सेहो लैत रहलहुँ। इलेक्ट्रॉनिक्स आ कम्प्यूटर सम्बन्धी लूरि बिसरी नहि ताहि लेल किछु किछु करैत रहलियैक *(टेबुल दिस इंगित करैत छथि)*

वैज्ञानिक ठीक छैक, हम अहाँ सबहक अभियान मे मदति करबाक सक्क भरि कोशिश करब। आर किछु ?

सुरेश नहि, खाली अहाँ सँ फेर कोना सम्पर्क करी से बता दिअऽ।

वैज्ञानिक बेस, ई लिअऽ हमर विशेष कोड। *(एकटा कागत पर किछु लीखि कए दैत छथि)* एहि द्वारा ब्रह्मांडक कोनो जगह सँ स्मार्टफोन सँ एकरा डायल कऽ सकैत छिऐक मुदा ध्यान राखब ई अनका हाथ नहि पड़ैक कारण ई गुप्त कोड छिऐक, एहि पर फोन टैपिंग लागू नहि छैक। अहाँ दूनू हमरा फोटो लेबऽ दिअऽ, जे हम परिचय लेल अपना सिस्टम मे देबैक। परिचय नहि भेटला पर सिस्टम कॉल स्वीकारे नहि करत।

रमेश एहि वेशभूषा मे फोटो जुनि लेल जाओ सर। हम दूनू अपन परिचय आ फोटो कालि अपनेक प्रयोगशाला मे पठबा देब।

वैज्ञानिक ठीक छैक। फोटो एलाक बादे हम किछु काज आगू बढ़ा सकब। एतेक ध्यान राखू जे हमरा प्रयोगशाला मे एके बेर प्रवेश कऽ सकब आ तकर बाद बाहरी संसार सँ कोनो सम्पर्क नहि रहत। मोबाइल आदि हम रखबा लेब। काज शेष भेलाक बादे बहरा सकब। मंजूर अछि ?

दूनू समवेत एकदम मंजूर।

वैज्ञानिक दू सप्ताहक समय दिअऽ।

सुरेश बेस, आब चलू, अहाँ कें आपस पहुँचा दैत छी। *(जाइत काल दूनू गोटे वैज्ञानिक कें पएर छूबि प्रणाम करैत अछि)।*

(वैज्ञानिक आगू आगू आ रमेश, सुरेश हुनकर पाछू पाछू मंच सँ प्रस्थान, प्रकाश बंद। नेपथ्य मे दू गोटेक स्वर मे घोषणा)

एक — एखने खबरि आएल अछि जे वैज्ञानिक अनुपम आपस आबि गेलाह। ओ प्रेस वार्ता मे घोषित केलनि जे हुनकर अपहरणक घटना पुलिसक कल्पना छलैक। नेता सबहक हत्या सँ घबराएल पुलिस बिना किछु बुझने एहि तरहक प्रचार केलक। राति मे हुनका किछु अभिनव आइडिया आएल छलनि तकरे मंथन करबाक लेल ओ कने सबेरे टहलए चल गेल छलाह।

दू — वैज्ञानिक अनुपमक अभिनव आइडिया पर कार्य करबा लेल दू सप्ताह बाद दूटा अंतरिक्ष वैज्ञानिक औथिन। ओ तीनू प्रायः दू तीन मास प्रयोगशालाक एकान्त मे रहि काज करताह। एहि अवधि मे हुनका संग कोनो तरहक सम्पर्क संभव नहि होएत।

एक — प्रयोगशालाक सुरक्षा बढ़ा देल गेलैक आ प्रशासनक सर्वोच्च स्तर पर एकर सूचना सेहो पठा देल गेलैक।

दू — उड़ती खबरि इहो अछि जे दूनू बाहुबली आपराधिक जीवन छोड़ि देलनि। आब शहर मे शांति रहत, से आशा करू।

दृश्य 2

मंच सज्जा पछिले दृश्य सन, खाली शास्त्र-पुराणक पोथीक बदला मोटका विज्ञान पोथी, जर्नल आदि राखल। कुर्सी चारिटा। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर लीखल छैक '"AI Laboratory (highly confidential)'। ई वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला थिक। प्रकाश वैज्ञानिक पर फोकस होइत अछि। अपना प्रयोगशाला मे बैसल ओ लैपटॉप पर कोनो लेख देखि रहल छथि आ लेगो ब्लॉक सँ खेला रहल छथि। सामनेक टेबुल पर एकटा छोट आकारक डिजिटल घड़ी, किछु सीडी/डीभीडी, किछु कोटक बटन, लेजर टॉर्च, आर किछु यंत्रादि पसरल छैक। इलेक्ट्रोनिक्स बला टेबुल कने परिवर्तित आ सजाओल। एहि टेबुल पर छद्म वेश मे रमेश आ सुरेश खेलौना बला छोटका ड्रोन सँ किछु काज कऽ रहल छथि।

मंचक उपर पर्दा सँ एकटा एलईडी बल्ब लटकि रहल छैक जाहि सँ किछु अन्तराल पर लाल रंगक प्रकाश मंच कें आलोकित करैत छैक। वैज्ञानिक लैपटॉप देखि चौंकैत छथि।

वैज्ञानिक — ई की ? *(फेर लैपटॉप कें देखऽ लगैत छथि)*

रमेश — की भेल सर ?

वैज्ञानिक — एखनहि बूझि जेबैक, काज करैत रहू।

जींस-कुर्ता पहिरने एकटा अपरिचित व्यक्तिक प्रवेश। हाथ मे गिटार सन बाजाक गिगबैग लटकल। एकदम वैज्ञानिकक सामने ठाढ़ भऽ जाइत छथि। प्रकाश पहिने आगन्तुक पर पड़ैत अछि तखन पूरा मंच आलोकित होइत अछि। वैज्ञानिक तरे तर मुसकिआइत छथि मुदा अकचकेबाक अभिनय करैत छथि।

वैज्ञानिक — अहाँ के छी, एतए भीतर कोना घुसि गेलहुँ ? सुरक्षा अधिकारी अहाँ कें रोकलनि नहि ?

आगन्तुक — *(ठाढ़ भेल, कने दूर हटि कए स्वतः)* हम तीनू लोक मे स्वच्छन्द विचरण करैत रहैत छी। हमरा के रोकत ? *(प्रकट, वैज्ञानिक लग जा कए)* हम एतए आकाश मार्ग सँ एलहुँ। मुदा अहाँ घबराउ नहि, अहाँक सुरक्षा कें हमरा सँ कोनो खतरा नहि अछि।

वैज्ञानिक — *(आश्चर्यचकित हेबाक अभिनय करैत, कुर्सी आगू बढ़बैत)* अच्छा, बैसू। बाजू अहाँ की चाहैत छी ? चाह, काफी किछु मँगाबी ?

आगन्तुक — *(कुर्सी पर बैसैत)* चाह, काफी छोड़ू, काज सूनल जाओ। ओना तऽ हम संगीत सँ सम्बन्ध रखैत छी मुदा एखन अहाँ लग वैज्ञानिक आविष्कार सबहक जानकारी लेबा लेल आएल छी।

वैज्ञानिक — सब आविष्कारक वर्णन इंटरनेट पर उपलब्ध छैक। आब इंटरनेट अपना ब्रह्मांड मे सबतरि उपलब्ध छैक आ कोनो ग्रहक बासी कतहु बैसल एकरा पढ़ि सकैत अछि।

आगन्तुक — हम अहाँक मुहें सूनए चाहैत छी।

वैज्ञानिक — *(रमेश, सुरेश दिस इंगित करैत)* हमर ओ दूनू सहकर्मी एतए काज करथि तऽ कोनो असुविधा नहि ने ?

आगन्तुक — कोनो असुविधा नहि। अपने सुनाउ।

वैज्ञानिक — बेस, हम किछु पुरान आविष्कारक जानकारी दऽ सकैत छी। जाहि विषय पर शोध चलिए रहल छैक तकरा बारे मे हम किछु नहि कहब।

आगन्तुक — कोनो बात नहि, जतेक अहाँ बता सकैत छी से बताउ। *(कागत पर लिखब शुरू करैत छथि।)*

वैज्ञानिक — *(किछु सोचि आ घड़ीक आकारक अपन स्मार्टफोन बहार करैत)* एकरा देखियौ, आब ई बड़ पुरान आविष्कार भऽ गेलैक, एकर अनेक नव रूप सेहो आबि गेलैक अछि मुदा हम एखनहुँ कखनो कए एकर व्यवहार कऽ लैत छी। एकरा स्मार्टफोन कहल जाइत छैक।

आगन्तुक — *(किछु लिखैत)* ई की काज करैत छैक ?

वैज्ञानिक — एना कहियौ – ई की नहि करैत छैक। साधारण दूरभाष सँ लऽ कए सिनेमा देखब, चित्रक आदान प्रदान करब आ रोबोट कें कोनो काजक लेल आदेश देब तऽ पुरान बात भऽ गेलैक, आब हम एतए बैसले बैसल विश्वक कोनो भाग मे बरखा सेहो करबा सकैत छी, कोनो अन्य भाग मे रातिओ मे कृत्रिम सूर्य उगा सकैत छी, कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, आरो बहुत किछु।

आगन्तुक — *(चिन्तित होइत)* कृत्रिम सूर्यक निर्माण भऽ गेल। आश्चर्य ! अहाँ कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, ई तऽ विशेष चिन्ताक बात। *(लाल प्रकाश हुनका मुह पर पड़ैत अछि, ओ विचलित होइत छथि)* ई प्रकाश किएक ?

वैज्ञानिक — एतुका सब गतिविधिक जानकारी केन्द्र कें पठाओल जा रहल छैक। असुविधाक लेल क्षमा चाही। *(रमेश आ सुरेश अपना मोबाइल पर कोनो ट्यून लगबैत छथि आ नेपथ्य मे जोर सँ वर्षा आ बिहाड़िएबाक आवाज होइत छैक। आगन्तुक ध्यान सँ सुनैत छथि)*

आगन्तुक — ई की भऽ रहल छैक ?

वैज्ञानिक कृत्रिम वर्षा लेल एकटा नव प्रयोगक तैयारी मे किछु जाँच कएल जा रहल छैक। चिन्ताक कोनो बात नहि।

आगन्तुक कृत्रिम वर्षा ! आश्चर्य। *(लेगो ब्लॉक दिस देखबैत)* ई की छिऐक ?

वैज्ञानिक ब्रह्माण्डक अन्य ग्रह पर बनऽ बला महल आदिक नमूना। सौरमंडलक सब ग्रह पर एहन भवन सब बनि गेल छैक। वायुमंडलक संरचनाक हिसाबें भवनक डिजाइन तैयार कएल जाइत छैक।

आगन्तुक किछु बुझबा मे नहि आएल, आगू कहियौ।

वैज्ञानिक *(हाथ मे एकटा* प्लास्टिक जकाँ *कोनो पारदर्शी चीज उठबैत)* एकरा देखियौ, ई अद्भुत वस्तु थिक।

आगन्तुक *(किछु नहि देखैत)* अहाँ हमरा बड़ बुड़िबक बुझैत छी की ? खाली हाथ देखा कए कहैत छी एकरा देखियौ। एना ठकू नहि।

वैज्ञानिक इएह तऽ एकर विशेषता छैक, हमरा हाथ मे अछि मुदा अहाँ देखि नहि सकैत छिऐक। ई अदृश्य पदार्थ छिऐक। एकर गुण सब सुनबैक तऽ ततेक आश्चर्य लागत जे अहाँ फेर कहब ठकैत छी।

आगन्तुक बेस, कहियौ।

वैज्ञानिक संक्षेप मे बूझि लिअऽ जे धरती पर जे कोनो प्राकृतिक धातु (metal) पदार्थ अछि तकर नीक सँ नीक गुण एकरा गुणक तुलना मे करोड़ो गुणा न्यून लागत। आ सबसँ महत्वपूर्ण बात जे एकरा पर तापक कोनो असरि होइते नहि छैक, कतेको सूर्यक सम्मिलित ताप कें ई सहि सकैत अछि। एकर वस्त्र जे कोनो वस्तु कें ओढ़ा देबैक ओ अदृश्य भऽ जाएत। ओकरा आगिक कोनो डरे नहि रहतै।

आगन्तुक *(बेस आश्चर्यचकित होइत)* सत्ते कहैत छी ?

वैज्ञानिक हम तऽ पहिनहि कहलहुँ जे अहाँ कें लागत हम झूठ बजैत छी। हमर काज छल सुना देब, विश्वास करी बा नहि से तऽ अहाँ जानी।

आगन्तुक *(बेस चिन्तित होइत)* ठीक छैक, किछु आर सुनाउ।

वैज्ञानिक एकर दोसर गुण छैक जे विशेष तरीका सँ एहि मे बिजलीक धारा बहाओल गेला सँ ई पारदर्शी नहि रहि जाइत छैक, एकरा सँ लेजर प्रकाश बहराइत छैक।

आगन्तुक *(लिखबाक उपक्रम करैत)* ई लेजर प्रकाश की होइत छैक ?

वैज्ञानिक कृत्रिम सूर्ये जकाँ पूर्णतः मानव निर्मित अजूबा। *(एकटा लेजर टॉर्च उठा कए वैज्ञानिक ओकर प्रकाश चारू कात देखबऽ लगैत छथि, प्रकाश अनेक पुंज मे बँटैत छैक, एक दू बेर आगन्तुकक आँखि पर सेहो पड़ैत छनि, ओ हाथ सँ आँखि झँपैत छथि आ विस्मित होइत छथि)*

आगन्तुक एहि सँ तऽ आँखि आन्हर भऽ जेतैक।

वैज्ञानिक ओ क्षणिक प्रभाव छैक, चिन्ताक बात नहि।

आगन्तुक बेस, मानि लैत छी। एकर आर की की गुण छैक ?

वैज्ञानिक सबटा विस्तार सँ कहऽ लागब तऽ एक दिन मे खतमो नहि होएत। संक्षेप मे बूझि लिअऽ जे लेजर प्रकाश धरती पर प्रायः सब क्षेत्र मे उपयोग भऽ रहलैक अछि आ सब लोक एकर गुण सँ परिचित अछि। एही प्रकाश द्वारा हम एतए बैसले बैसल कोनो ग्रह पर शत्रु कें नष्ट कऽ सकैत छी।

आगन्तुक एकर एकटा नमूना हमरा भेटि सकत की ?

वैज्ञानिक *(एकटा पुरान छोट लेजर पेन हुनका दैत)* ई राखि लेल जाओ।

(सुरेश खेलौना बला ड्रोन कें उड़बैत छथि। नेपथ्य मे हवाइ जहाज उड़बाक आवाज होइत। आगन्तुक एहि खेला कें आश्चर्यचकित भावें देखैत छथि आ आबाज कें अकानैत छथि। ड्रोन मंच पर एम्हर ओम्हर उड़ैत रहैत छैक आ फेर एक क्षणक लेल आगन्तुक के माथ पर बैसि जाइत छैक। ओ अकचकाएल भावें छड़पि कए कुर्सी सँ उठि जाइत छथि। तखने ड्रोन हुनका माथ सँ उड़ि जाइत छैक। ओ असौकर्यक भाव देखबैत माथ हँसोथैत छथि। तकर बाद ओ ड्रोन वैज्ञानिक के सामने रुकि जाइत छैक।)

रमेश हमरा सबहिक प्रयोग सफल रहल सर। ई यान आब तैयार अछि। आब हमरा सबकें अनुमति भेटए।

वैज्ञानिक बहुत नीक। आब अहाँ दूनू गोटे अपन अभियान पर जा सकैत छी। हमर शुभकामना। *(वैज्ञानिकक पैर छुबैत रमेश आ सुरेशक प्रस्थान)*

आगन्तुक ई कोन चिड़ै छियैक जे एतेक जोर के आवाज करैत उड़ैत छैक ?

वैज्ञानिक चिड़ै नहि ई अन्तरिक्ष यान छिऐक जे अपना ब्रह्मांड मे कतहु जा सकैत अछि। एकर ओजन मात्र सौ ग्राम छैक मुदा ई एक हजार किलोग्रामक ओजन उठा कए उड़ि सकैत अछि।

आगन्तुक ई तऽ पुष्पक विमानक कान कटलक यौ।

वैज्ञानिक आब ककर कान कटलक आ ककर नाक कटलक तकर अन्दाज हमरा तऽ नहि अछि। अहाँ कोन काल्पनिक पुष्पक विमानक चर्चा करैत छी से तऽ अहीं जानी मुदा हमर टीम एकटा एहन यान पर शोध कऽ रहल अछि जे अन्य ब्रह्मांडक यात्रा सेहो कऽ सकत। एकर बारे मे हम एखन किछु नहि कहि सकब।

आगन्तुक मुदा अन्य ब्रह्मांड पर जेबा लेल अहाँ सब कें देवता सबहक संग युद्ध करऽ पड़त।

वैज्ञानिक *(कने खिसिएबाक मुद्रा मे)* ई तऽ अनर्गल बात भेल, देवता लोकनि अपने सबतरि बौआइत रहथि से नीक आ मानव अपन आविष्कारक बल पर कतहु जाए तऽ हुनका सँ युद्ध करऽ पड़त। ओना कोनो युद्ध लेल हम सब रोबोट सेना आ विभिन्न प्रकारक परमाणु बम तैयार कइए लेने छी।

आगन्तुक रोबोट सेना की भेलैक ?

वैज्ञानिक रोबोट माने भेल यंत्र मानव जे पूर्णतया मानव निर्मित अछि। छिऐक तऽ ई एक प्रकारक यंत्र मुदा प्रजनन छोड़ि बाँकी सब काज मनुक्खे जकाँ करैत अछि। सीमित मात्रा मे प्रजनन सेहो कऽ सकैत अछि, माने दोसर रोबोट कें बना सकैत अछि यदि अनुमति दऽ दियैक।

आगन्तुक *(आश्चर्य सँ आँखि पसारैत)* अद्भुत, एहि रोबोट सेनाक संहारक कोनो विधि ?

वैज्ञानिक ओ हम नहि कहि सकैत छी। एतेक बूझि लिअऽ जे अस्त्र शस्त्रक कोनो असरि नहि होइत छैक एकरा पर।

आगन्तुक आ परमाणु बम की भेलैक ?

वैज्ञानिक कने घुसकि आउ। *(लैपटॉप पर एकटा छोट भिडियो हुनका देखेबाक उपक्रम)* अपने जे देखलियैक ताहि सँ दस लाखक जनसंख्या बला शहर नष्ट भऽ गेल छलैक। एखन एहन शक्तिशाली बम सब छैक जे एकेटा सँ आर्यावर्त सदृश देश स्वाहा भऽ जाएत।

आगन्तुक *(बहुत बेसी चिन्तित होइत)* एतेक शक्तिशाली ! एहन अस्त्र तऽ महाभारत युद्ध मे सेहो नहि छलैक। बेस, आगू कहियौ।

वैज्ञानिक एकरा देखियौक *(हाथ मे एकटा बटन सदृश वस्तु लैत)* ई भेल हमर प्रतिरूप। हमर मस्तिष्कक सब ज्ञान एहि मे भरल छैक। एकरा साइबोर्ग (cyborg) अवस्था कहल जाइत छैक। हम आब एहि अवस्था मे अमर भऽ गेल छी। एकर एक प्रति राष्ट्रीय संग्रहालय मे सेहो राखल छैक। आब हमरा मृत्युक कोनो डर नहि अछि।

आगन्तुक (*लिखब बन्द करैत आ कागत कें पॉकेट मे रखैत*) बर बेस, एहि सँ बेसी हमरा दिमाग मे एखन नहि अँटत। की हमरा अपन अंतरिक्ष यानक एकटा नमूना दऽ सकैत छी ?

वैज्ञानिक *(अस्वीकारक मुद्रा बनबैत)* माफ करब मुदा एहि लेल उच्च स्तरीय अनुमतिक आवश्यकता छैक। संगहि अपनेक पूर्ण परिचय सेहो जरूरी होएत।

आगन्तुक *(परिचयक नाम पर कने घबराइत)* कोनो बात नहि। रहए दियौक। एतेक जानकारीक लेल बहुत धन्यवाद। चलैत छी। *(प्रस्थान)*

वैज्ञानिक *(दर्शक कें सम्बोधित करैत)* अहाँ सब चिन्हलिएनि ई के छलाह ? नहि ने ? अरे ओएह नारद बाबा, वेष बदलि कए आएल छलाह देवता सबहक दिस सँ धरती पर जासूसी करए लेल। हमरा खुफिया रिपोर्ट भेटि गेल छल तें विज्ञानक प्रगतिक बारे मे चुनि चुनि कए बात कहलिएनि। हमर बात सूनि कए केहन चिन्तित भऽ रहल छलाह से तऽ अपने सब देखिये लेलियैक। हमरा तऽ लागल जे बेसी खिस्सा कहबनि तऽ कतहु हॉर्ट अटैक ने भऽ जाइन। मुदा भागि गेलाह। देखियौ आगू की करैत छथि।

वैज्ञानिक द्वारा लैपटॉप बन्द करबाक उपक्रम, प्रकाश शनैः शनैः बंद होइत अछि, नेपथ्य मे धड़-पकड़ के हल्ला, किछु लोक एम्हर ओम्हर दौड़ैत देखाइत अछि। दू बेर पिस्तौल चलबाक शब्द सूनऽ मे अबैत अछि। तखने घोषणा ___

घबराउ नहि, एहि गोली सँ दूनू बाहुबली रमेश आ सुरेशक अन्त भेल। पुलिस द्वारा घेरल जेबाक बाद पकड़ेबाक डर सँ दूनू बाहुबली रमेश आ सुरेश अपने गोली सँ आत्महत्या कऽ लेलक। करीब बीस बरखक बाद राज्य मे शान्ति बहाल होएत। चलू महावीर मंदिर मे लड्डू चढ़बै लेल। सब जा रहल अछि।

दृश्य 3

मंच सज्जा मे मामूली परिवर्तन, टेबुल सब हटा देल गेल अछि, मात्र किछु कुर्सी राखल। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड स्विच ऑफ छैक। ई स्थान बाहुबली रमेश आ बाहुबली सुरेशक मृत्युस्थल अछि। खाकी ड्रेस पहिरने दूनू नीचा मे सूतल पड़ल अछि, दूनूक हाथ लग पिस्तौल छैक। मंचक दूनू कात सँ दूटा यमदूतक प्रवेश। प्रकाश हुनका दूनूक मुह पर पड़ैत अछि। दूनू मरल लोक लग आबि कए ठाढ़ भऽ जाइत अछि। तखन प्रकाश यमदूतक मुह सँ नीचा दिस मृतक पर पड़ैत छैक। यमदूत ओकरा दूनू कें उठेबाक चेष्टा करैत अछि तखने ओ दूनू मृतक ठाढ़ भऽ जाइत अछि।

रमेश — *(हाथक इशारा सँ स्वागत भाव देखबैत)* यमदूत लोकनिक मर्त्यलोक मे स्वागत अछि।

दूत-एक — हमरा सब कें स्वागत कथी लेल करैत छी ? हमरा सबहक काज अछि मात्र अहाँ दूनू कें लऽ कए यमराजक दरबार मे हाजिर करब, फेर कोनो दोसर ड्यूटी मे लागि जाएब।

सुरेश — अरे जेबे करब, कने सुस्ता लिअऽ, एक जूम तमाकुओ तऽ खा लिअऽ, भरि दिन यमलोक आ मर्त्यलोकक बीच दौड़ैत दौड़ैत थाकि जाइत होएब ने।

दूत-दू — थाकि तऽ जाइते छी मुदा काजे ततेक ने भऽ गेल अछि जे की कहू ? साँसो लेबाक फुरसति कहाँ भेटैत छैक ?

रमेश — तें ने कहैत छी, कने विलमि जाउ।

(दूनू यमदूत एक दोसराक मुह ताकए लगैत छथि)

दूत-एक — *(दूत-दू सँ)* की विचार छौ ?

दूत-दू — ठीक छै, एक बेर कने नियम भंग कइए ली।

सुरेश — बहुत नीक। *(तमाकू चुना कए दैत)* लिअऽ, खाउ।

दूनू दूत — ई की छिऐ ?

रमेश — आहि रे बा ? तमाकूओ नहि खेने छिऐक कहियो ?

दूत-दू — ई सब यमलोक मे थोड़बे भेटै छै जे देखने रहबै ?

सुरेश — अच्छा छोड़ू एकरा, आब ई कहू, हमरा सब कें यमलोक मे की की करऽ पड़तै ?

दूत-एक — से कोना कहू ? यमराज जखन फैसला सुनेताह तखन ने बुझबै।

रमेश — फैसला तऽ हमरा सब कें बुझले अछि, नरके मे जेबाक अछि। ताहि हिसाबें कहू ने की सब हेतैक।

दूत-दू — सबटा तऽ हमरा सब कें नहि बूझल अछि, किछु देखने छिऐक से कहैत छी, जेना गरम तेलक कुण्ड मे फेकि देनाइ।

सुरेश — अच्छा ! तेल कतेक गरम रहैत छैक ? माने ओकर तापमान कतेक रहैत छैक ?

दूत-एक ई की जानए गेलियै ? गरम तेल गरम तेल होइत छैक, बस एतबे। हम सब की ओहि मे पैसलियै जे बुझबै कतेक गरम छैक।

रमेश ऐं यौ एतबो नहि बुझैत छिऐ जे 50 डिग्री पर गरम कएल गेल तेल आ 200 डिग्री पर गरम कएल गेल तेल मे अन्तर होइत छैक ? अच्छा ई कहू जे तेल कोन वस्तुक रहैत छैक ? सरिसो, तीसी, नारिकेल, सोयाबीन आ कि कोनो फेंट फाँट बला ?

(दूनू यमदूत एक दोसराक मुह तकैत छथि, किछु नहि बूझि रहल छथि जे की उत्तर देथि।)

दूत-एक देखू, ई हमरा सब कें नहि बूझल अछि आ ने एहि सँ कोनो सरोकारे अछि। अहाँ यमलोक पहुँचि कए यमराज सँ बूझि लेब। चलू देरी जुनि करू।

सुरेश कने सूनू तऽ। ओ तेल कोना गरम कएल जाइछै ? माने बिजलीक हीटर लागल छैक कि सौर ऊर्जा सँ आ कि जारनि सँ?

दूत दू हमरा सब कें किछु नहि बूझल अछि। चलू देरी भऽ रहल अछि। *(दूनू दूत दूनू मृतक कें पकड़बाक चेष्टा करैत अछि, सुरेश, रमेश जोड़ सँ ओकर हाथ झटकि दैत छैक जाहि सँ ओ सब खसि पड़ैत अछि, फेर अपना कें सम्हारैत ठाढ़ होइत अछि)*

दूत एक अहाँ सब यमलोक नहि जेबै ?

सुरेश जेबै तऽ जरूरे, मुदा बिना सब बात फरिछेने विदा नहि होएब। अहाँ सब जाउ आ यमराज कें एतहि बजौने अबियनु, ताबत हम सब एतहि रहब। *(दूनू गोटे अपन कमीज कें समेटि बाँहि उघार करैत अछि आ फूलल मांशपेशी कें निहारैत अछि। दूनू यमदूत ओहि दूनूक शारीरिक सौष्टव कें देखैत कने भयभीत होइत छथि।)*

दूत-दू अहाँ सब नहिए जेबैक ?

रमेश कहलहुँ ने, यमराज सँ सब बात फरिछा लेलाक बादे जेबैक।

(दूनू मंचक पाछू भाग मे नीचा मे पड़ि रहैत अछि, खिसियाएल मुद्रा मे यमराजक प्रवेश, वेश भूषा पौराणिक वर्णनक हिसाबें। प्रकाश हुनका पर फोकस होइत अछि।)

यमराज *(तामसक मुद्रा मे दूत कें सम्बोधित करैत)* एतेक देरी किएक लागि गेल ? हम सब चिन्ता मे पड़ल छलहुँ। चित्रगुप्त महराजक कहला पर हमरा अपनहि आबए पड़ल।

दूत एक हमरा दूनू कें माफ कएल जाओ आ अपन समस्या कहबाक अनुमति देल जाओ धर्मराज। हम सब तऽ घुरि कए जाए बला छलहुँ अहाँ कें बजबै लेल।

यमराज *(कने सामान्य होइत)* बिना मृतात्मा कें लेने घुरि जइतहुँ ? से किएक ?

दूत-दू की कहू धर्मराज, एहन मृतात्मा सँ कहियो पाला नहि पड़ल छल जे प्रश्न पूछत।

यमराज *(आश्चर्यचकित होइत)* मृतात्मा प्रश्न पुछलक ? आश्चर्य, एना तऽ कहियो नहि भेल छलैक।

दूत-एक सएह ने कहैत छी। दूटा लोक अछि जे अपना कें बाहुबली कहैत अछि, नाम छैक सुरेश आ रमेश। ओ पूछऽ लागल नरक मे कोन तरहक यंत्रणा देल जाइत छैक।

दूत-दू हम सब गलती सँ कहि देलियै जे गरम तेलक कुण्ड मे फेकल जाइत छैक। बस, तकर बाद ओ सब प्रश्न पर प्रश्न करऽ लागल, तेल कतेक गर्म रहैत छैक, तेलक तापमान कतेक होइत छैक ? कोना कए गरम कएल जाइत छैक ? कोन पदार्थक तेल रहैत छैक __नारिकेल तेल कि सरिसो तेल कि फेंट फाँट बला।

दूत-एक हमरा सब कें एकर उत्तर बूझल नहि छल। ओ दूनू कहलक जे जाबत एहि प्रश्नक उत्तर नहि भेटि जाएत ताबत यमलोकक यात्रा नहि करब। जाउ यमराज कें अपनहि आबए कहियनु।

यमराज *(खिसिआइत)* मृतात्माक एतेक साहस कोना भेलैक जे अहाँ सब सँ प्रश्न पुछलक ? हमरा बजबैक आदेश देलक ? *(तामसें जोर सँ बजैत)* कतए अछि ओ दुष्टात्मा सब? देखाउ हमरा। एखनहि हम ओकरा सबहक नंगटपनी घोसारि दैत छिऐक। *(एखन प्रकाश रमेश आ सुरेश पर फोकस होइत अछि)*

दूत दू *(हाथक इशारा सँ देखबैत)* ओएह दूनू छी ओ बाहुबली मृतात्मा।

(दूनू मृतात्मा हड़बड़ा कए उठि जाइत छथि आ एकहि संग धर्मराजक पैर पर खसैत छथि)

रमेश, सुरेश जय हो, जय हो, धर्मराजक जय हो। महाराज वैवस्वतक जय हो। मर्त्यलोक मे महाराज सूर्यपुत्रक स्वागत।

यमराज *(तामस कें घोंटैत, कने हटि कए, स्वतः)* आश्चर्यक बात, पहिल बेर एहि मर्त्यलोक मे कियो यमराजक जयजयकार करैत स्वागत कऽ रहल अछि, जरूर ई दूनू कोनो विशिष्ट व्यक्ति अछि। *(लग आबि, प्रकट)* अहाँ सब यमदूतक संग नहि जा कए बहुत पैघ नियम भंग केलियै, जे आइ तक नहि भेल छलैक। एहि अपराध लेल अहाँ सब कें सजाए बढ़ाओल जा सकैत अछि।

रमेश पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ सूर्यपुत्र *(हुनका हाथ पकड़ि कुर्सी पर बैसबैत छथि, अपने दूनू गोटे टेबुलक दूनू कात ठाढ़ होइत छथि, यमदूत लोकनि काते मे ठाढ़ रहैत छथि)* यमलोक जेबा लेल तैयारे छी धर्मराज, आ जे कोनो सजाए भेटत ताहि लेल सेहो तैयार छी।

सुरेश मुर्दा पर जेहने दश मोनक बोझ तेहने पचास मोनक बोझ। जखन नरके मे बास करबाक अछि आ यातना सहबाके अछि तखन हजार बरखक बदला दू हजार बरख सएह ने। कोनो फर्क नहि पड़ैत छैक।

यमराज *(आश्चर्यचकित होइत)* अहाँ सब अपने मोने कोना बूझि गेलिऐ जे नरके मे बास करबाक अछि ?

रमेश धर्मराजक जय हो। बुझले अछि जे हम सब कोनो अबोध बच्चा नहि छलहुँ ने। ब्रह्महत्या, नारीहत्या, भ्रूणहत्या, गोहत्या आदि सँ लऽ कए छागरहत्या, शूकरहत्या, कुक्कुटहत्या, मत्स्यहत्या, छुटले की छल ?

यमराज *(आश्चर्य प्रदर्शित करैत)* अच्छा !

सुरेश ओतबे नहि देव, डकैती तऽ साधारण बात भेल, अपहरण, व्यभिचार आ साइवर क्राइम मे सेहो हमरा दूनूक जोड़ नहिए रहल हेतैक।

रमेश बीस बरख तक एतेक जे पाप कएल तऽ ई सोचिए कए ने जे नरक मे दीर्घ प्रवास करब।

सुरेश नरक मे देल जाए बला यातना आदिक वृहत जानकारी सेहो लऽ लेने छी धर्मराज। सबटा शास्त्र पुराण आर अन्यान्य ग्रन्थ सब सेहो चाटि गेल छी।

रमेश जतेक प्रकारक अपराध हम सब कएल अछि ओहि सब लेल एतुका ग्रन्थ सब मे तऽ सजाएक प्रावधानो नहि छैक। लगैत अछि ग्रन्थकार कें ओहि अपराधक कल्पनो नहि छलनि। तकरा बारे मे अपने कोना निर्णय लेब से सोचि राखू धर्मराज।

यमराज ओ तऽ बादक बात भेल, एखन एहि मृत्युलोक मे रुकल किएक छी जखन कि अहाँ सबहक भोगक अवधि शेष भऽ गेल अछि ? अंट शंट प्रश्न पूछि कए यमदूत लोकनि कें रोकने रहलियैनि से किएक ?

सुरेश महाराज औदुम्बर, हमरा सब कें बूझल छल जे देरी भेला सँ अपने स्वयं मर्त्यलोक एबे करबैक।

रमेश हमरा सबहक प्रश्न ओ नहि अछि जे दूत लोकनि सँ पूछल। ओ तऽ बहन्ना छल।

सुरेश महाराज वैवस्वत, अपने कें कष्ट देल एतए बजाए से मात्र एकटा छोट अनुरोध करबाक हेतु।

रमेश हमर आग्रह जे दूनू यमदूत कात भऽ जाथि। *(यमराज इशारा करैत छथिन, दूनू दूतक प्रस्थान)*

सुरेश हमरा सबहक आग्रह एतबे जे अपना संग पाँच किलो ओजनक एकटा ब्रीफकेस लऽ जेबाक अनुमति भेटए।

यमराज *(आश्चर्यचकित होइत)* ई की बाजि रहल छी ?

रमेश महाराज औदुम्बरक जय हो। बुझले होएत जे आब फोकटियो हवाइ जहाज कम्पनी सब लोक कें सात किलो ओजन तक के ब्रीफकेस अथवा हैंडबैगक अतिरिक्त पन्द्रह किलो चेकइन लगेज लऽ जेबाक सुविधा दैत छैक। हम सब तऽ मात्र पाँच किलोक अनुमति माँगि रहल छी। सेहो ब्रीफकेस टा, कोनो चेकइन लगेजक झंझट नहि।

यमराज मुदा ई कोना सम्भव छैक ? आइ तक कहियो एना नहि भेलैक।

सुरेश अपने तऽ धर्मराज छी, हम सब मर्त्यलोकक अदना प्राणी अपने कें की बुझाएब ? तैयो पुछैत छी जे जखन इन्द्र गौतम ऋषिक पत्नी अहिल्याक शीलभंग करबा लेल गेलखिन तऽ ओहि सँ पहिने ओहन घटना भेल छलैक की ?

यमराज अहाँ सब की कहऽ चाहैत छी ?

रमेश एतबे जे कोनो नव काज शुरू करबा लेल पहिने की भऽ गेल छैक तकरा देखब जरूरी नहि। एना जँ लोक करऽ लागए तऽ कहियो कोनो नव काज शुरुए नहि हेतैक।

यमराज मुदा यमलोक मे मृत्युलोकक चीज वस्तु कोना रहि सकैत छैक ?

सुरेश एखनहु तऽ रखने छिऐक धर्मराज। नरकक विभिन्न कुण्ड मे जे मानव मल, मूत्र, रक्त, मज्जा, वीर्य, अश्रु आदि भरल छैक से यमलोक मे तऽ नहिए भेटैत हेतैक। मानव तऽ मर्त्यलोकेटा मे छैक देव। ओ सामान सब तऽ एतहि सँ उठा कए लऽ गेलियैक।

यमराज सम्भवतः अहाँक बात ठीक अछि, मुदा ई काज बहुत दिन पहिने भेल छलैक जखन हमर पूर्वक पूर्वक पूर्वक यमराज यमलोकक काज देखैत छलखिन।

रमेश कहुना भेल होइक, भेलैक तऽ। बस, तखन हमरा सबहक निवेदन स्वीकार कऽ लेल जाओ सूर्यपुत्र।

सुरेश यदि अपनेक यान मे जगहक समस्या हो तऽ हम सब विशेष यानक व्यवस्था कऽ सकैत छी। ओ यान एतुका वैज्ञानिक लोकनि कठिन शोध सँ तैयार केलनि अछि जे ब्रह्मांड मे सबतरि जा सकैत छैक।

यमराज नहि नहि, तकर काज नहि पड़तैक मुदा हम अपने मोने ई अनुमति नहि दऽ सकैत छी। एहि लेल हमरा देवता सबहक संग विशेष मीटिंग करए पड़त।

रमेश कइये लेल जाओ धर्मराज, ताबत हमरा दूनू कें एतहि छोड़ि देल जाओ। ओतए चल गेलाक बाद घूरि कए तऽ आएल पार नहि लागत।

यमराज ठीक छैक, हम दूनू यमदूत कें अहाँ दूनूक पहरा मे लगा दैत छिएनि। *(संकेत करैत छथि, दूनू यमदूतक प्रवेश)*, हम कने देवलोक मे एकटा इमर्जेन्सी मीटिंग करबा लेल जाइत छी, ताबत हिनका दूनू कें एतहि रखियनु। *(यमराजक प्रस्थान)*

सुरेश अपने सब आराम सँ भीतर मे बैसू ने। कतेक काल ठाढ़ रहब। भीतर मे अपनेक लेल सब इन्तजाम कएल अछि। *(इशारा करैत छथि)*

दूत-एक भगबै नहि ने यौ ?

रमेश भागि कए कतए जेबै ? मरल लोक समाजक बीच कोना जेतैक ? सब भूते बूझि लेत आ ढेपियौनाइ शुरू करत। अपने सब निश्चिन्त रहू।

दूत-दू बेस *(दूनूक प्रस्थान)*

सुरेश *(दर्शक दिस मुह घुमा)* देवलोक मे इमर्जेन्सी मीटिंग चलि रहल छैक, परमीसन तऽ भेटबे करतैक। किएक ने जल्दी जल्दी ब्रीफकेस तैयार कऽ ली।

रमेश आ विशेष यान कें सेहो तैयार करबा कए राखिए ली। किन साइत ?

(दूनूक प्रस्थान, मंच अन्हार)

दृश्य 4

मंच सज्जा पहिने जकाँ। एकटा टेबुल आ छओटा कुर्सी टेबुलक तीन कात अर्धवृत्ताकार रूप मे सजाओल, आब डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर लीखल छैक 'देवलोक'। विष्णु बीचक कुर्सी पर, ब्रह्मा हुनका बामा कात आ महेश दहिना कातक कुर्सी पर बैसल छथि। हिनका सबहिक मेकअप पौराणिक वर्णन हिसाबें कएल गेल अछि। महेश हाथ मे डमरू रखने छथि आ जटा सेहो बेस पैघ बनल छनि। प्रकाश शनैः शनैः तीनू पर पड़ैत अछि। तकर बाद प्रवेश पथ पर पड़ैत अछि जतए नारद

बाबा अपन पौराणिक वेष मे वीणा लेने आबि रहल छथि। नारद जखन लग पहुँचैत छथि तखन पूरा मंच आलोकित होइत अछि।

नारद नारायण, नारायण ! त्रिमूर्ति कें साष्टांग दंडवत।

विष्णु स्वागत मुनिश्रेष्ठ। आसन ग्रहण कएल जाओ *(एकटा कुर्सी दिस इशारा करैत)* बहुत दिनक बाद दर्शन भेल।

नारद *(ब्रह्माक बगल बला कुर्सी पर बैसैत)* हँ, कने चल गेल छलहुँ पृथ्वी भ्रमण हेतु। ओम्हरहु बहुत दिन सँ नहि गेल रही से सोचल जे देखि लियैक खुरापाती मानव जंतु की कऽ रहल अछि।

ब्रह्मा मानव कें खुरापाती किएक कहलियैक देवर्षि ? ओ तऽ हमर अप्रतिम सृजन थीक।

नारद अपनेक वचन सत्य चतुरानन, मुदा सोचियौ ओकर मस्तिष्क केहन तेज बना देलियैक। कहियो इहो सोचलियै जे एहन स्थिति आबि जेतैक जे ओ मानव देवलोक पर विजय अभियान लेल तैयार भऽ जाएत। राक्षस सँ अपने सब बहुत बेर युद्ध कएल, छल बल सँ जीतल मुदा मानव अहाँ सँ छलो बल मे बीसे रहत। ओकर कपटबुद्धिक आगू देवलोकक कोनो बुधियार नहि टिकता।

महेश *(जटा पर हाथ फेड़ैत आ मुसकिआइत)* नीके ने, एतए हम सब फोकट मे मजा लूटि रहल छी। ओ सब तऽ कहुना दिन राति खटि कए किछु उपार्जन करैत अछि, आविष्कार करैत अछि, आब जमाना आबि गेलैक अछि जे समस्त ब्रह्माण्ड मे ओकरे सबहक राज होइक।

विष्णु औघड़दानी कें तऽ एहिना चौल फुराइत रहैत छनि।

महेश चौल नहि, सत्य बात। मानव हमरा सब कें पूजा करैत, प्रशंसा करैत, टिटकारी दैत अकास ठेका देलक, अकर्मण्य बना देलक आ अपने कतेक आगू बढ़ि गेल।

विष्णु अच्छा, सुनियौ देवर्षि कें की कहबाक छनि। अपने मुनिश्रेष्ठ कने फरिछा कए कहियौ की की देखलियै, बुझलियै।

नारद देखलियै बहुत किछु, बुझलियै ओलक टोंटी। तैयो किछु बता दैत छी। पहिने हम रस्ता पेड़ा पर छद्म रूपें घुमैत रहलहुँ आ लोकक बीच वार्तालाप सुनैत रहलियै, धिया पूताक खेलेनाइ देखैत रहलियैक। अद्भुत नव नव वस्तुक आविष्कार भऽ गेलैक अछि। सबतरि सुनियै रोबोट सँ ई काज करा ले, रोबोट सँ ओ काज करा ले, एक ठाम देखलियै बच्चा सब फतिंगा जकाँ मसीन सब मे पचास साठि टा पजेबा बान्हि कए उड़ा रहल छल। पुछलियै ई की छिएक तऽ सब हँसऽ लागल।

ब्रह्मा फेर किछु बुझलियै की नहि ?

नारद हँ, एकटा बच्चा कें दया एलै, कहलक ‘‘बाबा ई ड्रोन छिऐक, अहाँ कोन शहर मे रहैत छी ? आब ड्रोन तऽ सबतरि भेटैत छैक, दोकान सँ चीज वस्तु आब सबहक घरे घर एकरे द्वारा पठाओल जाइत छैक’’।

विष्णु मुनिश्रेष्ठ, ठीक सँ सुनलियै की नहि ? ओ ड्रोन बाजल की द्रोण ?

महेश अहूँ की मजाक करैत छिऐक जनार्दन। द्वापर युगक गुरु द्रोण की आब कलियुग मे लोकक घरे घरे दोकान सँ सामान पहुँचबैत हेथिन ?

नारद हमरहु पहिने भेल जे बच्चा कें बजबा मे किछु गलती भेलैक, ड्रोन नहि द्रोण कहबाक छलैक। हम ओकरा फेर टोकलियै तऽ फेर सब बच्चा हँसए लागल, कहलक ई ड्रोन छिऐक, अंग्रेजी भाषाक शब्द छिऐक। हम तऽ गुम्मे रहि गेलहुँ।

ब्रह्मा *(कने चिन्ता आ आश्चर्यक भाव लेने)* बेस, आर की सब देखलियै, बुझलियै ?

नारद जखन एहि तरहें जिज्ञासा शान्त नहि भेल तऽ पता लगा कए एकटा वैज्ञानिकक कार्यालय मे घुसि गेलहुँ।

विष्णु वैज्ञानिक ? ई कोन जीव होइत छैक ? पंडित सब तऽ सुनने छलियै, ऋषि मुनि तपस्वी आदि सँ भेंट भेले अछि मुदा वैज्ञानिक शब्द तऽ पहिले पहिल सूनि रहल छी।

महेश *(डमरू कें दू बेर बजबैत)* तें ने हम कहलहुँ, हम सब घमण्ड मे चूर रहलहुँ, बुझैत रहलियै जे एहि ब्रह्मांड पर अनन्त काल तक हमर राज रहत, इनारक बेंग जकाँ देवलोकक चारि टा पहाड़, नदी, झील आ अप्सरा सबहक बीच दिन बितबैत रहलहुँ आ आन ठाम की की विकास भेलैक से बुझबाक कहियो चेष्टे नहि केलहुँ। ओ तऽ धन्य कही नारद मुनि कें जे किछु नव बातक जानकारी अनलनि। *(एतए नारद पाकिट सँ लेजर टॉर्च निकालि ओकर प्रकाश चारू दिश फेकैत मंच पर नाचए लगैत छथि। लेजर प्रकाश तीनू देवताक आँखि मे सेहो पड़ैत छनि, हुनका सब कें चकचोन्ही लगैत छनि, सब आँखि मिलमिलबैत छथि आ आश्चर्यचकित भेल नारद दिस तकैत छथि)*

ब्रह्मा ई कोन खेला देखा रहल छिऐक देवर्षि ?

नारद लेजर प्रकाशक नमूना चतुरानन। ई तऽ अति सूक्ष्म यंत्र अछि जे हम ओहि वैज्ञानिक सँ माँगि लेल। ओकर कहब छलैक जे बहुत शक्तिशाली लेजर सँ ओ सब कोनो ग्रह पर शत्रु कें नष्ट कऽ सकैत अछि। ओतए जे हम देखल से वर्णनातीत अछि। की कहू, एकेटा यंत्र सँ विभिन्न रंगक प्रकाश अनेक दिशा मे अनेक दूर तक जाइत जे देखल तऽ ठकमूड़ी लागि गेल।

महेश *(दूबेर डमरू बजबैत)* अति उत्तम आविष्कार। मानव जाति कें हार्दिक बधाइ।

विष्णु बधाइ बाद मे देबैक उमापति, एखन अपना पर आबऽ बला खतराक चिन्ता तऽ करू। अच्छा, आर की की देखलियैक-सुनलियैक देवर्षि ?

नारद ड्रोन, लेजरक अतिरिक्त रोबोट, साइबोर्ग, कृत्रिम सूर्य-चन्द्र, ग्रह-उपग्रह, कतेक कहू ? आब इन्द्रक पूजाक कोन काज ? मानव कृत्रिम रूपें सब किछु करबा लैत अछि। जखन चाही, जतए चाही, जतबे चाही, वर्षा भऽ गेल। शत्रु कें तंग करबा लेल बिहारियो उठा देत।

ब्रह्मा सब किछु हमरा सब लेल बहुत चिन्ताक विषय अछि। आर किछु कहू।

नारद ओहि वैज्ञानिक सँ बहुत रास जानकारी भेटल, मुदा जेना कहलहुँ ने, बात सब ठीक सँ बुझबा मे नहि आएल। हम ओहि वार्तालापक अंश कें जे किछु लीख सकलहुँ से देखा दैत छी। *(विष्णुक हाथ मे एकटा कागत दैत छथिन, ओ स्वयं पढ़ि कए ब्रह्मा आ महेश कें बेराबेरी पढ़ऽ दैत छथिन, कियो ठीक सँ बात नहि बूझैत छथि, तीनू देव कें आश्चर्य सँ आँखि पसरले रहि जाइत छनि)*

विष्णु बहुत बात तऽ हमहू नहि बुझलहुँ मुदा चिन्ताक बात एकेटा जे आब मानव दोसर ब्रह्माण्ड पर जेबाक तैयारी मे लागल अछि। अपना ब्रह्माण्डक विभिन्न भाग मे ग्रह नक्षत्र पर यान आ दूत पठा देलक अछि।

ब्रह्मा एहि अभियान कें रोकबा लेल किछु तऽ सोचहि पड़त।

(एतबा मे हकासल पियासल अपसियाँत भेल यमराजक प्रवेश)

यमराज त्रिदेव कें हमर साष्टांग दंडवत स्वीकार हो।

विष्णु धर्मराजक स्वागत, मुदा एना अपसियाँत किएक भेल छी ? यमलोक मे सब कुशल तऽ अछि ने।

यमराज कुशल क्षेम बाद मे कहब, हम दौड़ल आएल छी एकटा अति आवश्यक मंत्रणा लेल।

ब्रह्मा मुदा चित्रगुप्त कें कतए छोड़ि देलिएनि ? हुनका बिना कोनो मंत्रणा कोना होएत ?

यमराज से ठीके, हड़बड़ी मे ध्याने नै रहल। एखनहि हम दूत पठा हुनका बजा लैत छी। *(नेपथ्य दिस देखि)* कने चित्रगुप्त कें जल्दी दरबार मे अबै लेल कहि देबनि। *(प्रत्यक्ष भऽ कए)* ताबत हमर समस्या तऽ सूनल जाओ।

महेश ठीक छैक, कहल जाओ धर्मराज।

यमराज किछु समय पूर्व मर्त्यलोक मे दू गोटेक टिकट कटि गेलनि। हमर दूत हुनका आनऽ गेल। ओ दूनू अपना कें बाहुबली कहैत छलखिन। दूत लोकनि जखन बहुत देरी भेलाक बादो मृतात्मा कें लेने नहि अएलाह तखन चित्रगुप्त महराज सँ मंत्रणा केलाक बाद हमरा स्वयं ओतए जाए पड़ल। *(एही बीच मोट मोट खाता पजियौने अपन पारम्परिक वेश मे चित्रगुप्तक प्रवेश, हुनका सम्बोधित करैत)* आउ, आउ, एकदम ठीक समय पर अपने पहुँचि गेलहुँ। हम जे मर्त्यलोक गेल छलहुँ तकरे खिस्सा कहि रहल छी।

ब्रह्मा ई तऽ बड़ विचित्र बात लगैत अछि जे यमदूत मृतात्मा नहि अनलक आ अहाँ अपनहि गेलहुँ। आबहु ओ सब आएल की नहि ?

यमराज नहि ने। सएह तऽ खिस्सा कहैत छी आ आवश्यक मंत्रणा करबाक अछि। ओहि दूनू बाहुबलीक अनुरोध छैक जे अपना संग किछु सामान यमलोक लऽ जेबाक अनुमति भेटए। हम स्वयं एकर निर्णय नहि लऽ सकलहुँ तें दौड़ल एलहुँ अपने सबहक दरबार मे। ओहि दूनू कें हम अपन दूतक पहरा मे मर्त्यलोके मे छोड़ि आएल छी।

विष्णु सामान आ मर्त्यलोक सँ यमलोक आनल जाएत ? ई तऽ सत्ते अभूतपूर्व घटना होएत। एकर दूरगामी प्रभावक अध्ययन केने बिना हम सब कोना निर्णय लेब जे अनुमति देल जाए की नहि।

महेश पहिने चित्रगुप्त महराज सँ सूनि लेल जाए हुनकर विचार।

चित्रगुप्त *(बड़ी काल तक खाता कें उनटबैत पुनटबैत)* हमरा खाता मे जतेक नियम कानून लिखल छैक से मात्र जीव लेल छैक। निर्जीव सामान लेल कोनो नियम कानून कहियो बनाओले नहि गेलैक।

ब्रह्मा हमरा त ऽ एहि मे बेस खतरा बुझा रहल अछि। जेना मुनि नारद सुनौलनि, यदि किछु एहन सामान आबि गेल तऽ फेर देवलोक कें सेहो डर छैक ने।

यमराज ओकरा दूनूक कहब छैक जे मर्त्यलोक सँ सामान पहिनहुँ यमलोक पठाओल गेलैक अछि। विभिन्न कुण्ड सब मे मानव मल मूत्र रक्त मज्जा आदि भरल गेलैक से तऽ ओतहि सँ आनल गेलैक। यमलोक आकि देवलोक मे मानव तऽ छलैक नहि।

विष्णु बात तऽ ठीके कहैत अछि ओ सब। कने नारद मुनिक विचार सेहो सूनि लेल जाओ।

नारद हम जे किछु देखलियै तकरा आधार पर एतबे कहब जे ओकरा सबहक सामान हम सब चीन्हि नहि सकबैक। लाभदायक होएत की हानिकारक से बुझबाक कोनो उपाय देवलोक मे नहि छैक। बूझू अन्हार घर सापे साप।

चित्रगुप्त हमरा सब तऽ ''एम्हर इनार आ ओम्हर खाधि''बला स्थिति मे आबि गेल छी। अनुमति नहि देला सँ ओ दूनू बाहुबली मर्त्यलोक सँ टसकत नहि आ अनुमति देला सँ संगें की आनत सेहो अज्ञात अछि।

यमराज किछु निर्णय शीघ्रे लेबऽ पड़त।

महेश हमरा विचारें अनुमति देबा मे कोनो हर्ज नहि। देवलोक नष्ट हेतैक तऽ नीके हेतैक, फेर सँ निर्माण करब। पुरान घर खसए, नव घर उठए *(डमरू बजबऽ लगैत छथि)*

ब्रह्मा संहारक रुद्र कें तऽ विनाशलीला देखबा मे मजा अबैत छनि। सब गोटे कने सीरियस होउ आ प्रस्ताव पर विचार करू।

विष्णु छोड़ू सब त्वञ्चाहंत आ बतकही। आनऽ दियौ जे आनत से। यदि कोनो विघ्न आओत तऽ अन्त मे भगवती तऽ छथिए सब दुष्टक संहार करबा लेल।

चित्रगुप्त नीक विचार। यदि सब गोटेक सहमति हो तऽ हम खाता मे लीख ली। आगू फेर एहन प्रस्ताव पर बहस करैक काज नहि रहत।

ब्रह्मा लीखू सर्वसम्मति सँ प्रस्ताव पास भेल।

यमराज बहुत नीक, आब हम चलैत छी *(चित्रगुप्तक संग प्रस्थान)*

महेश चलै चलू, बहुत समय बर्बाद भेल, कनियाँ सब बाट तकैत हेतीह *(हुनका संग विष्णुक प्रस्थान, ब्रह्मा रुकि जाइत छथि।)*

ब्रह्मा *(नारद कें सम्बोधित करैत)* मुनिश्रेष्ठ, कने एम्हर आउ। *(नारद हुनका लग अबैत छथि, ब्रह्मा हुनका कान मे किछु कहैत छथिन)*

नारद नारायण, नारायण ! देखियौ की कऽ सकैत छी। *(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)*

दृश्य 5

स्थान मर्त्यलोक मे बाहुबली रमेश आ सुरेशक मृत्युस्थल। मंच सज्जा ओहिना, कुर्सी टेबुल अछिए, डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड स्विच-ऑफ अछि। दूनू यमदूत कुर्सी पर बैसि टेबुल पर पएर पसारि मोबाइल मे कोनो सिनेमा देखबा मे तल्लीन छथि जे हुनका रमेश आ सुरेश देलकनि। दूनू बाहुबली मृतात्मा मंच सँ गाएब छथि। हड़बड़ाएल यमराजक प्रवेश। यमदूत लोकनि यमराज कें नहि देखैत छथि।

यमराज *(डँटबाक मुद्रा मे जोर सँ बजैत)* की देखबा मे तल्लीन छी यौ दूत लोकनि ? *(दूनू दूत चौंकि जाइत छथि, जल्दी जल्दी मोबाइल कें नुकेबाक चेष्टा करैत छथि मुदा यमराज मोबाइल छीन लैत छथिन आ स्वयं देखऽ लगैत छथि। कने हटि कए, स्वतः)* अद्भुत वस्तु अछि ई। एतबेटा डिब्बा मे कोना एतेकटा मनुक्ख घुसिया गेल छैक आ बन्दे रहैत कोना नाचियो गाबि लैत छैक ? आश्चर्य। *(लग आबि प्रकट)* ई की देखि रहल छलहुँ अहाँ सब ? छिः छिः, कतऽ भेटल ई ?

(दूनू यमदूत मूड़ी झुकेने चुपे ठाढ़ रहैत छथि)

यमराज *(आर जोर सँ बाजि खिसिआइत)* चुप किएक छी ? बजै किएक नहि छी ? मर्त्यलोकक एहन अधलाह वस्तु अहाँ सब कें छुबाक साहस कोना भेल ? बूझल नहि छल जे एतए मृतात्मा कें छोड़ि आर कोनो वस्तु छूनाइ वर्जित छैक ?

दूत एक *(मूड़ी नीचा झुकौने, कान पकड़ैत)* गलती भऽ गेल धर्मराज।

दूत दू *(कान पकड़ैत)* पहिल बेर ई दूनू मृतात्मा कें लऽ जेबा मे देरी भेल आ एकरे दूनूक कारण ईहो गलती भेल सूर्यपुत्र। क्षमा कएल जाओ।

दूत एक अपनेकें देरी भऽ रहल छल तऽ समय बितबैक लेल ई यंत्र ओ दूनू मृतात्मा हमरा दूनू कें देलनि। एहन गलती फेर कहियो नहि होएत से वचन दैत छी। अपने कें काज भऽ गेल ?

यमराज काज भऽ गेल, मुदा अहाँ सब ओहि दूनू मृतात्मा कें कतऽ भगा देलियै ?

दूत दू एतहि अछि ओ दूनू *(मृतात्मा कें मंच पर चारू कात तकैत छथि, नहि देखि दूनू दूत चिन्तित होइत छथि, एक दोसराक मुह तकैत छथि)*

यमराज मुह की तकैत छी, भागि गेल ओ सब। भेल बखेरा, आब समूचा धरती पर ओकरा सब कें तकैत फिरू।

(तखने ब्रीफकेस लेने रमेश आ सुरेशक प्रवेश)

रमेश *(ब्रीफकेस रखैत)* एतहि छी धर्मराज।

सुरेश *(ब्रीफकेस रखैत)* हम सब अपनेक संग यमलोक यात्राक लेल तैयार छी।

यमराज *(निःश्वास छोड़ैत, स्वतः)* हऽ, पैघ झंझट सँ बचलहुँ। *(प्रकट)* आब विलम्ब की? चलैत चलू।

रमेश बस, अन्तिम बेर कने आहे माहे सुना दी, यमलोक मे फेर अवसर नहिए भेटत।

सुरेश अपने हमरा दूनू पर बहुत कृपा केलिऐ धर्मराज, स्वयं आबि गेलियै आ ब्रीफकेस संगें लऽ जेबाक अनुमति सेहो दऽ देलियै, एहि लेल हम सब कोटि जिनगी पर्यन्त अपनेक अनुगृहीत रहब।

रमेश हमरा सबकें ई जानि बहुत दुख होइत अछि सूर्यपुत्र जे धरती पर कतहु कियो भक्तिभाव सँ अपनेक पूजा नहि करैत अछि। अपने सन धर्मात्माक पूजा हेबाके चाही। आन देवताक मन्दिर सब गामे गाम टोले टोल आ अपनेक मन्दिर तकबा लेल गूगल सर्च करए पड़ैत छैक।

यमराज हमरा अपन काज सँ मतलब अछि, पूजा अर्चनाक चिन्ता हमरा नहि अछि।

रमेश ई अपनेक महानता भेल धर्मराज मुदा सोचियौ ई भेदभाव किएक ? अपने यमलोकक एतेक पैघ साम्राज्यक देखभाल करैत छिऐक, अपनेक संग जे चित्रगुप्त रहैत छथि हुनको पूजा लेल वर्ष मे एक दिन निश्चित कएल छनि, तखन मात्र अपने किएक छूटल रहैत छी ? अपनेक पूजा तऽ सब देवताक संग हेबाक चाही सूर्यपुत्र।

सुरेश जरूर एहि मे देवलोकक कोनो चक्रचालि छैक। हम तऽ कहब जे अपने देवता सब कें एक बेर हड़तालक नोटिस पठा दियनु जे यमलोकक सब काज अनिश्चित काल लेल बन्द भऽ जाएत। अपनहि सब लाइन पर आबि जेताह।

यमराज यमलोकक काज बन्द कऽ देबैक ? ई की बाजि रहल छी अहाँ ?

रमेश काज बन्द नहि करबैक, बन्द करबाक धमकीएटा देबाक अछि देव, हमरा विश्वास अछि जे हड़तालक नोटिस भेटला पर देवलोक मे हड़कम्प मचि जेतैक आ सब अपनेक बात मानबा लेल बाध्य भऽ जेताह।

सुरेश हमरा सब कें जे कहबाक छल से कहि देलहुँ देव, यदि किछु अनुचित बजा गेल हो तऽ माफ कऽ देबैक। आब अपने रस्ता देखबियौ, हम सब यात्रा लेल तैयार छी।

रमेश *(दून्नू यमदूत कें सम्बोधित करैत)* ब्रीफकेस उठा ने लएह, तकैत की छह ?

दर्शक दिस घूमि कए दून्नू कोरस मे एकटा समदाओन गबैत छथि जाहि मे अपन कएल समस्त अपराधक लेल जनता सँ माफी मँगैत छथि।

बर रे कुदिन मे जनम हम लेलियै, पढ़ि लीखि भेलियै जवान
चाकरी के फेरा मे नेता के संग धेलियै, बनि गेलियै राकस हेवान
माए बापक सपना समाजक मनोरथ, माटि मे देलियै मिलाए
पापक जड़ि ओहि नेता सबकें मारि कए, लेलियै यम कें बजाए
चलै छी हम यमदेश सब कें कना कए, कएल बहुत संहार
एहन अधम हम माफी कोना मँगबै, करबै अहीं सब विचार, करबै ....

(गबैत गबैत दून्नू कानए लगैत छथि, पर्दा खसैत अछि, तखने नेपथ्य मे आगि लागि जेबाक हल्ला होइत अछि। लोक सबहक भाग-दौड़ आ अग्निशमन गाड़ीक हूटर के आवाज सुनाइ पड़ैत अछि। आगिक बारे मे दू व्यक्ति द्वारा घोषणा होइत अछि ___

एक बहुत दुखद खबरि अछि जे वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला आ राष्ट्रीय संग्रहालय मे आगि लागि गेल। ई आगि एहन समय मे लागल जखन वैज्ञानिक अनुपम अन्य ब्रह्माण्ड जेबाक तैयारी मे लागल छलाह। तीनटा वैज्ञानिकक प्रायः तीन मासक प्रयास सँ अन्य ब्रह्माण्ड जाए बला विशेष विमान तैयार कएल गेल छल।

दू वैज्ञानिक अनुपम प्रेस वार्ता मे बतौलनि जे आगि सँ भेल क्षतिक आकलन करबा मे समय लागत। आगि कोनो शत्रु द्वारा लगाओल गेल छल। राडारक आँकड़ा कें नीक जकाँ छानबीन केला सँ शत्रुक पता लागि जेबाक सम्भावना अछि मुदा राष्ट्रीय सुरक्षा नीति कें देखैत शत्रुक परिचय गुप्ते राखल जाएत।

प्रथम अंक समाप्त

अंक 2

दृश्य 1

मंच सज्जा मे कोनो विशेष अन्तर नहि। एकटा टेबुल आ किछु कुर्सी मंच पर राखल। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर लिखल अछि 'यमलोक'।

यमराज आसन पर बैसल छथि। बगल मे चित्रगुप्त अपन खाता बही पसारने ओहि मे डूबल छथि। प्रकाश पहिने यमराज पर पड़ैत अछि तखन चित्रगुप्त पर। फेर प्रवेश पथ पर, जतए दूनू यमदूत बाहुबली मृतात्मा रमेश आ सुरेश कें लेने आबि रहल छथि। हुनका दूनूक मंचक बीच पहुँचला पर पूरा मंच आलोकित होइत अछि। दूनूक हाथ मे ब्रीफकेस छनि, से मंच पर रखैत छथि।

यमराज — चित्रगुप्त महराज, इएह दूनू ओ विशिष्ट बाहुबली मृतात्मा छथि रमेश आ सुरेश। हिनकर कर्मक लेखा जोखा देखि लेल जाओ।

रमेश — *(नम्र स्वरें)* धृष्टता माफ हो महाराज तऽ निवेदन करी। यदि ब्रीफकेस खोलबाक अनुमति भेटैत तऽ अपने सबहक काज आसान भऽ जाइत।

यमराज — अहाँ दूनू लेल जखन सब नियम कानून बदलले गेल तखन इहो कइये लिअऽ।

(दूनू नीचा झुकि कए अपन ब्रीफकेस खोलि स्मार्टफोन बहार करैत छथि, ओहि मे लीखल विवरणक फाइल निकालि ओकरा चित्रगुप्त कें दैत)

सुरेश — एहि मे अपने कें हमरा दूनूक सबटा पापक रेकॉर्ड भेटि जाएत। हमरा दूनू द्वारा कएल गेल हत्या, अपहरण, बलात्कार, व्यभिचार आदिक विस्तृत विवरण तारीख, साल आ समय सहित लिखल अछि।

रमेश — ई विवरण हमरा कम्प्यूटर मे सेहो भेटि जाएत। इंटरनेट आब पूरा ब्रह्माण्ड मे उपलब्ध छैक। यदि एतए कम्प्यूटर उपलब्ध हो तऽ क्षणे मे सब सूचना हाजिर भऽ जाएत।

चित्रगुप्त — इंटरनेट आ कम्प्यूटर की होइत छैक ? छोड़ू ई मुरखाहा गपसप। *(स्मार्टफोनक विवरण कें देखैत आ अपना खाता सँ मिलबैत)* धर्मराज, विवरण तऽ ठीके नीक सँ लीखल अछि।

यमराज — ठीक छैक, एखन तऽ हिनका दूनू कें जल्दी अपन स्थान पठेबाक अछि तकर इन्तजाम होअए।

चित्रगुप्त — हिनकर कर्मक फल देखि तऽ लगैत अछि जे छियासियो नरक कुण्ड कम पड़ि जाएत। हिनका दूनू कें सब नरक कुण्डक बास भोगनाइ छनि तें कतहु सँ शुरू कऽ सकैत छी।

यमराज — तऽ पहिने अग्निकुण्डे मे जाथु।

रमेश — अनुमति हो तऽ एकटा तुच्छ निवेदन करी धर्मराज।

यमराज — आब की ? डराइत छी की ?

सुरेश — नहि धर्मराज, उखरि मे मुह देलाक बाद मुसराक कोन डर ? यमलोक मे आबि पापी कें यातनाक कोन डर ? डर होइतै तऽ लोक पाप करबे नहि करैत। हमर निवेदन दोसर अछि।

रमेश — हमरा दूनू कें स्नान करबाक अनुमति देल जाओ महाराज वैवस्वत।

यमराज *(तमसाइत)* पापी नरकभोगी मृतात्मा कें स्नानक कोन काज ? ई कोन नव टाटक ठाढ़ केलहुँ अहाँ सब ?

सुरेश धर्मराज, अपनेक न्याय तीनू लोक मे ख्यात अछि। बुझले होएत जे फाँसिओक सजा भेटल कैदी कें अन्तिम इच्छा पूछल जाइत छैक आ पूरा कएल जाइत छैक।

रमेश ओतबे नहि, ध्यान दियौक देव जे छागड़ो कें बलि देबा सँ पहिने स्नान करा देल जाइत छैक। हमहूँ सब जखन विभिन्न नरक कुण्ड मे हजारो सालक सजा भोगए जा रहल छी तऽ ओहि सँ पहिने एक बेर नीक जकाँ स्नान कऽ लेब उचिते ने हेतैक न्यायराज।

चित्रगुप्त धर्मराज, बहस मे हिनका दूनू सँ जीतब कठिन अछि। अपन चमत्कार तऽ ई सब मर्त्यलोके सँ देखा रहल छथि। तें हमर विचार जे हिनका लेल स्नानक व्यवस्था कइये देल जाए।

सुरेश *(चित्रगुप्तक पैर पकड़ैत)* धन्य छी प्रभो। बस एकटा आर विनय जे स्नान खुला मे नहि बन्द कक्ष मे करबाक व्यवस्था हो आ ब्रीफकेस लऽ जेबाक अनुमति सेहो भेटए।

यमराज बन्द कक्षक स्नानघर तऽ मात्र हमरेटा अछि, ताहि मे मृतात्माक प्रवेश सम्भव नहि। *(दूनू यमदूत कें सम्बोधित करैत)* जाउ कोनटा बला इनार कें घेरेबाक व्यवस्था करू।

रमेश धर्मराज, नियम मे मामूली ढिलाइ सँ समयक अमूल्य बचत होइत। जतेक काल मे इनार घेरल जाएत ओतेक काल मे तऽ स्नान कऽ कए हम सब किछु घण्टा अग्निकुण्ड मे बासो कऽ लेब। एहि दृष्टिकोण सँ देखल जाओ सूर्यपुत्र।

चित्रगुप्त हमरा लगैत अछि नियम मे ढील देबहि पड़त। जतेक जल्दी हिनका दूनू कें एतए सँ हटाएब ओतेक जल्दी दोसर काज शुरू कऽ सकब। ई सब जतेक काल एतए रहताह, किछु ने किछु टाटक ठाढ़ करितहिं रहताह।

यमराज *(दूनू यमदूत कें सम्बोधित करैत)* बेस, चित्रगुप्त महराजक इच्छानुसार हिनका दूनू कें हमरा स्नानघर मे लेने जइयनु। कड़ा पहरा राखब। चिन्हिते छिएनि केहन मायावी छथि। कतहु एम्हर ओम्हर बहरा जेताह तऽ पूरा यमलोक मे हड़कम्प मचि जाएत।

दूनू दूत जे आज्ञा देव। *(दूनूक ब्रीफकेसक संग दूनू कें स्नानघर दिस लऽ जाइत छथि।)*

चित्रगुप्त हमरा लक्षण किछु नीक नहि लागि रहल अछि। ई सब धरती पर पापो केलक अछि, जतेक जे काज केलक से अनायासे नहि, खूब सोचि विचारि कए केलक, ओकर क्रमबद्ध रेकॉर्ड सेहो तैयार केने अछि जे सत्ते मे हमरा खाता सँ नीके छैक, हरदम विचित्र माँग रखैत अछि जकरा एकदम अनुचितो नहि कहि सकैत छिऐक।

यमराज अपने तऽ ई खेला एखन देखलियैक अछि, हम तऽ कतेक काल सँ देखि रहल छी। एही खेलाक कारण ने हमरा मर्त्यलोक जाए पड़ल आ फेर दौड़ि कए देवलोक आबए पड़ल मंत्रणा लेल। *(किछु खियाल करैत)* स्नान मे बहुत देरी लगौलक ई दूनू।

(एतबे मे एक यमदूत दौड़ल अबैत अछि एकदम परेशान भेल)

दूत-एक जुलुम भऽ गेल धर्मराज, ओ दूनू एकहि संग स्नानघर मे प्रवेश कऽ गेल दूनू ब्रीफकेसक संग। एतेक देरी लागि गेलैक मुदा बहराइते नहि अछि। तें अपन संगी कें पहरा पर राखि हम दौड़ल एलहुँ अपने कें सूचित करै लेल।

यमराज चित्रगुप्त महराज, आब की होएत ? एहि मायावी मृतात्माक कोनो ठेकान नहि।

चित्रगुप्त कने देखि लेल जाओ, यमलोक सँ भागत कतए ?

(ताबत पाछू मे दोसर दूतक संग रमेश आ सुरेश आबि कए ठाढ़ भऽ जाइत छथि, दूनूक हाथ मे एकटा पैकेट छनि।)

रमेश अपने सबहक समय बचबै लेल एके बेर स्नानघर मे प्रवेश कएल धर्मराज। कोनो कुण्ड मे पठेबा सँ पूर्व एकटा तुच्छ अनुरोध मानल जाओ देव।

यमराज आबहु अहाँ सभक बखेराक अन्त नहि भेल अछि ?

सुरेश नहि देव, बखेरा कोनो नहि, मात्र एतबे जे मर्त्यलोकक ई छोटछीन उपहार स्वीकार कएल जाओ जे हम सब अपना ब्रीफकेस मे लेने आएल छलहुँ। *(रमेश अपन पैकेट यमराज कें आ सुरेश अपन पैकेट चित्रगुप्त के दैत छनि)*

यमराज *(पैकेट कें निहारैत)* एकर की प्रयोजन ?

रमेश उपयोग केलाक बाद एकर गुण अपनहि बूझि जेबैक महाराज वैवस्वत।

चित्रगुप्त *(पैकेट कें चारू कात घुमा कए देखैत)* एकरा की करबाक छैक ?

सुरेश एकर उपयोग अपने शयनकक्ष मे करबैक देव। पैकेट मे देखियौ एकटा टोंटी छैक। राति मे शयन कक्ष मे विश्राम करबा काल पैकेट सँ वस्तु कें बहार कए ओहि टोंटी कें सेहो खोलि देबैक। किछु काल बाद ओ पसरि जेतैक आ किछु बाजऽ लागत। ध्यान सँ सुनबैक आ जेना कहल जाए तहिना करबैक। यदि कोनो तरहक गड़बड़ी लागए तऽ टोंटी कें मुह बन्द कऽ देबैक। ओ वस्तु फेर अपन पुरान अवस्था मे आबि जाएत।

यमराज आर किछु ?

रमेश नहि देव, हम सब तैयार छी, पठाउ जाहि कुण्ड मे आदेश हो।

सुरेश *(रमेशक हाथ धरैत)* अग्निकुण्डक आदेश तऽ भइये गेल छैक, चलऽ ने अपनहि पुछैत पुछैत चलि जाएब। बुझले छहु ओतए सौ हाथ उपर धधरा उठैत हेतैक। *(विदा हेबाक उपक्रम करए लगैत अछि)*

चित्रगुप्त आब अहाँ सब किछु बेसिए हड़बड़ाएल लगैत छी। थम्हू, हमरा खाता मे नाम पता लिखऽ दिअऽ, एतए औंठा छाप दियौक। ई आदेशपत्र लऽ कए दूत लोकनि जेता अहाँक संग, ओतुका अधिकारी कें देथिन, ओ फेर औंठा छाप लेताह मिलबै लेल जे कतहु कोनो मृतात्माक अदलाबदली तऽ ने भऽ गेल। तकर बादे कुण्ड मे खसाओल जाएत।

रमेश दूटा निवेदन स्वीकार करियौ देव – पहिल जे औंठा छाप नहि लऽ कए दस्तखत लेल जाओ, हम सब तऽ उच्च शिक्षाप्राप्त छी। आब मर्त्यलोक मे सब साक्षर भऽ गेल छैक। दोसर जे हमरा दूनू कें कुण्ड मे खसबैक कोनो काज नहि, हम सब अपनहि खुसी खुसी कूदि जेबै ओहि मे।

यमराज दस्तखत तऽ आइ तक कियो करबे नहि केलक, हमरा इहो नहि बूझल अछि जे ओतुका अधिकारी लोकनि कें दस्तखत मिलान करबए अबैत छनि की नहि।

सुरेश अपने सब फोटो लेबाक व्यवस्था किएक ने रखैत छी ? कोनो तरहक झंझट नहि, फोटो देखू, मिलाउ। कोनो अदलाबदलीक सम्भावना नहि।

चित्रगुप्त *(खिसिया कए)* ई यमलोक छिऐक, मर्त्यलोक नहि। एतए वैज्ञानिक आविष्कार नहि भऽ रहल छैक, मात्र पापी मृतात्मा कें सजा देल जाइत छैक।

रमेश हम सब नीके लेल कहलहुँ देव, कोनो बात नहि, सुरेश, छोड़ह अपन जिद, दऽ दहक औंठा छाप आ आगू बढ़ऽ। *(औंठा छाप देबा लेल हाथ बढ़बैत छथि, चित्रगुप्त हुनकर औंठा छाप लैत छथि, तकर बाद दोसर कागत पर सुरेशक औंठा छाप सेहो लैत छथि, दूनू कागत दूतद्वय कें दैत)*

चित्रगुप्त हिनका दूनू कें सम्हारि कए अग्निकुण्ड तक लेने जइयनु, ओतुका अधिकारी कें सब बात नीक जकाँ बुझाए देबनि नहि तऽ ई दूनू ओतहु कोनो टाटक ठाढ़ करताह।

(दूनू यमदूतक संग रमेश आ सुरेशक प्रस्थान)

यमराज एक उखराहा मे मात्र दूटा मृतात्मा कें निपटाओल। एना जँ स्थिति आगुओ भेल तऽ यमलोकक कार्यालय बन्दे भऽ जाएत।

चित्रगुप्त आब आइ कोनो काज करबाक मोन नहि अछि। जाइ विश्राम करी, अहूँ विश्राम करू धर्मराज।

यमराज आजुक संध्या तऽ ओहुना एहि मायावी पैकेट कें बुझबा मे बीत जाएत।

चित्रगुप्त से ठीके। हमरा तऽ डर लगैत अछि जे ई सब कोनो षडयंत्र ने रचने होअए अपना सब कें बुड़िबक बनबै लेल।

यमराज की कहू ? ओतए जखन देवलोक सँ मीटिंग के बाद पहुँचलहुँ तऽ देखल जे दूनू दूत ओएह डायरी बला डिब्बा मे किछु देखि रहल अछि। ततेक तल्लीन छल जे हमरा पहुँचबाक कोनो सुधि नहि भेलैक ओकरा दूनू कें। हम ओ डिब्बा छीन कए जे देखल तऽ आश्चर्यचकित रहि गेलहुँ। एतेक छोट डिब्बा मे एकटा अर्धनग्न युवती बन्द आ कूदफान करैत।

चित्रगुप्त *(किछु नहि बुझबाक भाव चेहरा पर)* किछु बुझबा मे नहि आबि रहल अछि एकरा सबहिक खेला। देखियौ राति मे ई डिब्बा कोन करतूत देखबैत अछि।

यमराज बेस, आब चलल जाए। *(अपन अपन उपहारक डिब्बा सम्हारने दूनू गोटेक प्रस्थान, मंच अन्हार)*

दृश्य 2

मंच सज्जा मे कोनो परिवर्तन नहि। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर ओहिना लीखल छैक 'यमलोक'। यमराज मंच पर एम्हर ओम्हर टहलि रहल छथि। प्रकाश हुनका चेहरा कें आलोकित करैत अछि जाहि सँ हुनकर अति प्रसन्न मुद्रा देखाइत अछि।

यमराज *(स्वतः)* अद्भुत अछि ई मानव जाति। की की आविष्कार केलक अछि आ केहन गुण बला सब जे देवलोकक सब देवी, देवता, अप्सरा, गन्धर्व ओकरा सबहक नोकर नोकरनीओ बनबा जोगर नहि छथिन।

(किछु रुकि कए, एम्हर ओम्हर टहलैत आ देखैत, मूड़ी नीचा झुकौने, प्रकाश हुनका मात्र आलोकित करैत) एकटा छोट डिब्बा मे बन्द वस्तु, की नाम दियैक सेहो नहि बूझल अछि मुदा कतेक लुरिगर ! उर्वशी मेनका रम्भा तऽ कात जाथु, कामदेव प्रिया रतियो कें एतेक लूरि आ अनुभव हेतनि से कहब कठिन। स्वर कतेक मधुर ! अंग संचालन मे केहन चतुर ! लगैत अछि ऋषि वात्स्यायन सबटा ज्ञान एहि पुतरा मे भरि देलखिन। को विहातुं समर्थः ? ककरा ने हेतैक जे हरदम ओकरे सानिद्ध्य मे बैसल रही अथवा छाती सँ लगौने रहियै।

(रमेश आ सुरेशक अदृश्य भेल प्रवेश। जेना पर्दाक पाछू सँ बजैत हो। दूनू कातक प्रवेश पथ पर अदृश्य भेल ठाढ़।)

रमेश बुझाइत अछि धर्मराज मर्त्यलोकक उपहार अपने कें पसिन्न पड़ल।

यमराज *(चारू कात तकैत आ अकानैत)* अहाँ के बजैत छी ?

सुरेश उचित समय पर सबटा बूझि जेबैक धर्मराज, एखन एकरा रहस्ये रहए दियौक। *(पारम्परिक वेश मे वीणाक संग नारदक प्रवेश, मंच पूरा आलोकित होइत अछि।)*

नारद नारायण, नारायण !

यमराज स्वागत देवर्षि। आउ, आसन ग्रहण कएल जाओ। *(कुर्सी दिस इशारा करैत, दूनू गोटे बैसैत छथि)* कोना एमहर आबि गेलियै ?

नारद ओहिना यमलोकक हालचाल बुझबा लेल। ककरा सँ गप कऽ रहल छलहुँ धर्मराज ?

यमराज कियो देखा नहि पड़ि रहल अछि मुनिश्रेष्ठ। हमहूँ नहि बूझि रहल छिऐक। एहन आवाज प्रथमे सुना रहल अछि। यमलोक मे ओहि दूटा विचित्र मृतात्माक एला सँ एहन आभास भऽ रहल अछि जे किछु उलटफेर होमए जा रहल अछि।

रमेश *(नारद कें सम्बोधित करैत)* बाबा, फेर गेल छलियै मर्त्यलोक दिस?

नारद अहाँ के बजैत छी ? प्रकट किऐक नहि होइत छी?

सुरेश हम सब प्रकट भऽ जाएब तँ अहाँ कें दाँती लागि जाएत यौ बाबा। तें एखन एहिना रहए दियौ। उचित समय पर सब बात बूझि जेबै। एखन हमरा प्रश्नक उत्तर दियऽ।

(नारद चुप्पे रहैत छथि)

रमेश अहाँ की बुझलियै जे चुपचाप आकाश मार्ग सँ जा कए वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला मे आ राष्ट्रीय संग्रहालय मे आगि लगा देबै तऽ ओहि वैज्ञानिकक सबटा कएल धएल नष्ट भऽ जेतैक ? हाय रे बकलेल बाबा !

सुरेश एकटा बात ध्यान राखब बाबा। मानव सभ्यता बहुत विकसित भऽ गेलैक अछि, रामायण महाभारतक जमाना नहि रहलैक। पूरा ब्रह्माण्ड मे बीसो तह मे नुकाएल एकटा बगरो यदि पाँखि हिलेतै तकरो संकेत मर्त्यलोक मे राडार पर देखाइये जेतैक।

रमेश अगिला बेर यदि फेर धरती पर पएर रखबै बाबा तऽ पाछू मे लोक लगा देत डाबा आ जहिना सामा चकेबाक चुगला कें लोक आगि लगबैत छैक तहिना दाढ़ी मे किरासन तेल चोपकारि कए आगि लगा समूचा घुमाओत।

नारद *(बहुत घबराएल, यमराज कें सम्बोधित करैत)* वैवस्वत, किछु बूझिए नहि रहल छी जे मर्त्यलोकक घटनाक खबरि यमलोक मे कोना पहुँचि गेलै ? *(हुनका कान मे किछु कहैत छथि)*

सुरेश बाबा, उत्तर धर्मराज कोना देताह, हमहीं सब देब। मोन पारियौ बाबा जखन वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला मे गेल छलियै तखन ओ की सब कहने छलाह आ की सब देखेने छलाह।

रमेश बाबा, अनठबैत छिऐक तऽ हमहीं सब मोन पाड़ि दैत छी। ओ कहने रहथि जे एकटा स्मार्टफोन होइत छैक जाहि सँ ब्रह्माण्ड मे कतहु बातचीत कएल जा सकैत छैक, समाद आ फोटो आदि पठाओल जा सकैत छैक।

सुरेश हमरा सब कें ओएह वैज्ञानिक खबरि पठौने छलाह बाबा। खैर, एहि बात कें एखन कात जाए दियौक। एखन हम सब जे कहैत छी से दूनू गोटे ध्यान सँ सुनैत जइयौ।

रमेश हम सब समस्त नरक कुण्डक भ्रमण कएल अछि धर्मराज। जेना कि हमरा अन्दाज छल, सब कुण्ड पर लगाओल पहरेदार अपना मे मस्त कतहु चौपड़ि, कतहु लूडो, कतहु ताश आदि खेलाइत। ककरो ध्यान कुण्ड दिस नहि छलैक। लगैत छल जेना मर्त्यलोक मे अपना देशक अकर्मण्य पुलिस सब कें देखि रहल छी।

सुरेश कुण्ड सबहक हालत की कहू ? लगैए युग युग सँ एकर निरीक्षण नहि भेलैक। सब अधिकारीगण अपना अपना मे मस्त, घमण्ड मे चूर। कहैए लेल ओ सब पापात्मा कें कुण्ड मे पीटैत रहैत छथिन। हम सब ककरो किछु करैत नहि देखलियै। खानापूरी करैक लेल दिन मे एक बेर आ राति मे एक बेर डंडा चला देलनि, कोनो अभागल कें चोट लगलैक, बाँकी सब बाँचि गेल।

रमेश अग्निकुण्ड मे जारनि उसकैनिहार सेहो ओँघाइत छल, फल ई जे ओहि कुण्ड मे शुरू शुरू मे जे धधरा एक सौ हाथ उपर उठैत छलैक से एखन कहुना मात्र जड़ि रहल छैक। धधरा उपर किएक उठतैक ?

सुरेश तहिना दोसरो कुण्ड सबके हाल बेहाल। मूत्र कुण्ड आधा सँ बेसी सुखाएल, बिटकुण्ड मे सबटा बिष्टा सुखा गेल, अश्रुकुण्ड, शुक्रकुण्ड, मज्जाकुण्ड सब तहिना मात्र नाम लेल अश्रु, वीर्य आ मज्जा सँ भरल। तैलकुण्ड मात्र सुसुम गरम। धर्मराज, अपने स्वयं सम्भवतः बहुत दिन सँ कुण्ड सबके निरीक्षण नहि केलियैक अछि। यंत्रणा योग्य पदार्थक आब मर्त्यलोक सँ आपूर्ति सेहो सम्भव नहिए बूझू।

यमराज *(अकचकाइत)* से किएक ?

रमेश आब पृथ्वी पर राजतन्त्र तऽ रहलैक नहि जे राजाक आज्ञा सँ सब काज हेतैक। ओतए आब जन प्रतिनिधि होइत छथि से अहाँक आज्ञा मानताह कि अपन वोटरक बात सुनथिन। वैज्ञानिक लोकनिक अनुसंधानक फलस्वरूप सब तरहक मल मूत्र, रक्त, मज्जा आदि सँ अति उपयोगी पदार्थ सब बनि रहल छैक। तें जनता ओकरा बाहर पठबए नहि देतैक।

नारद बात तऽ ठीके कहैत छथि।

रमेश आर सुनू। कुण्ड सब जहिया बनाओल गेल, कोनो तरहें बुद्धिक उपयोग नहि कएल गेल। सोचियौक जे अग्निकुण्ड मे अनेरे एक सौ हाथ ऊँच धधरा उठैत छैक तकर की प्रयोजन ?

सुरेश कुण्ड मे जे मृतात्मा फेकल जाइत अछि से तऽ चल गेल नीचा। ओतए ओकरा जतेक धधरा आ ताप लगबाक छैक से तऽ लगबे करैत छैक ओहि सँ बेसी यंत्रणा तऽ हेतैक नहि। जे धधरा उपर उठैत छैक ओकर ताप अनेरे नष्ट होइत छैक। प्रदूषण बढ़ैत छैक। ओहि लेल जतेक जारनि खर्चा होइत छैक से निरर्थक।

रमेश जारनि लेल अपने जंगल कटबैत छिऐक जाहि सँ पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ैत छैक। जारनि जड़ैत रहला सँ ब्रह्माण्ड मे ताप बढ़ैत रहतैक जाहि सँ यमलोको प्रभावित हेबे करत।

यमराज एहि दृष्टिकोणे तऽ हम सब कहियो सोचबे नहि केलियैक।

सुरेश सब कुण्डक दशा तहिना अछि। एकटा अछि कुम्भीपाक कुण्ड, तकरा एक लाख मर्द गहींर बना देने छिऐक, भस्मकुण्ड, दग्धकुण्ड डेढ़ हजार मर्द गहींर अछि, बूझू कथी लेल ? सस्ता पैसा आ बेगारक मजदूर छल, खुनबैत गेलियै, खुनबैत गेलियै, कहियो ई नहि सोचलियै जे एकर प्रयोजन की ?

रमेश सब चीजक एकटा उचित आ विशिष्ट डिजाइन होइछै। ओहि अनुसारें बनेला सँ यातना सेहो अधिकतम होइतै आ खर्च सेहो कम। आ रखरखाबक खर्चा आर न्यून रहैत। की यौ नारद बाबा, चुप किएक छी, हम सब अनर्गल गप बजैत छी की ?

नारद *(बहुत मद्धिम स्वरें)* बात तऽ ठीके कहैत छी अहाँ।

सुरेश एकटा आर महत्वपूर्ण गप अछि काल सम्बन्धित। अपने सँ बेसी ई बात के बुझतैक धर्मराज जे यमलोकक नियम कानून सतयुग मे लिखल गेल छलैक जखन कियो कियो पातकी होइत छल।

यमराज से तऽ ठीके। जखन विभिन्न लोकक निर्माण भेलैक तखने यमलोक आ देवलोक अस्तित्व मे एलैक। आ सब नियम कानूनो ओही समय लिखल गेल रहैक।

रमेश हमरा सबहक विचारें आब कलियुग मे एहि नियम सब मे आमूलचूल परिवर्तनक आवश्यकता छैक। मर्त्यलोक मे समाज मे बहुत परिवर्तन आबि गेलैक अछि। जकरा सौ साल पहिने समाज गलत काज मानितैक तकरा आइ खुशी खुशी अंगीकार कऽ रहलैक अछि।

सुरेश जखन समाज अपनहि नियम बदलि रहलैक अछि आ देशक संविधान सेहो निरन्तर संशोधित भऽ रहलैक अछि तखन हजारो साल पुरान नियम यमलोक मे किएक चलाओल जाए ?

यमराज बात तऽ अहाँ तर्कसंगत कऽ रहल छी। हम सब जड़ताक शिकार भऽ गेलहुँ तें परिवर्तनक कोनो बात कहियो सोचबे नहि केलियैक।

रमेश महाराज ओदुम्बर, यदि अपने यमलोकक साम्राज्य कें एखनहुँ प्रभावी आ प्रासंगिक बनौने राखए चाहैत छी तऽ ई गुह मूत गिजबाक व्यवसाय छोड़ू। धरती पर आब लोक कें एहि खिस्सा सब सँ भय नहि होइत छैक तें पापीक संख्या मे एतेक वृद्धि भऽ रहलैक अछि।

सुरेश सबटा कुण्ड कें नष्ट कऽ कए एकदम अत्याधुनिक यातना शिविर सब बनाउ जाहि मे वायरलेस शॉक, लेजर ब्लाइन्डिंग, ग्रैविटी टॉर्चर, सोलर फ्राइ आदिक व्यवस्था रहतै।

रमेश एहि काज कें मूर्त रूप देबा लेल अति महत्वपूर्ण अछि जे तत्काल प्रभाव सँ वर्तमान नियम स्थगित कऽ देल जाए। नव संविधान निर्माण लेल कमेटी बनाओल जाए।

सुरेश दोसर जे कलियुगक उत्तरार्ध मे एखन पापीक संख्या मे गुणोत्तर वृद्धि हेतैक से यमलोकक विस्तार हेबाक चाही। यमलोकक विस्तार लेल देवलोक सँ अतिरिक्त जमीन आबंटन कराउ। नव निर्माण मे मर्त्यलोकक आर्किचेक्ट, इंजीनियर सब सँ मदति लेबाक व्यवस्था कराउ। बेस, आब हम सब चलै छी। *(आवाज बन्द)*

नारद की सोचलियैक वैवस्वत ? हमरा तऽ लगैत अछि ई आवाज झूठ फूसिक धमकी छल।

यमराज किछु फुराइये नहि रहल अछि। हम एकरा धमकी मानै लेल तैयार नहि छी, बात तऽ सटीक कहलक। हम सब विचित्र दशा मे आबि गेल छी देवर्षि।

नारद से की ?

यमराज पापक दंड लेल ओहि दूनू मृतात्मा कें पहिने अग्निकुण्ड पठेबाक विचार भेल। मुदा कुण्ड मे जेबा सँ पहिने ओ दूनू बन्द घर मे स्नान केलक। आ बाहर एलाक बाद हमरा आ चित्रगुप्त महाराज कें एक एक टा पैकेट उपहार देलक।

नारद अजगुत बात जे मृतात्मा स्नान केलक, पैकेट उपहार देलक। की छलैक ओहि मे ?

यमराज कोना कहू ? ओहि पैकेट मे मर्त्यलोकक नैवेद्य मिष्टान्न किछु नहि छलैक, छलैक एकटा पुतरा जे अपन रूप बदलि सकैत छल। ओ पुतरा अति मधुर नारी स्वर मे बजैत छल। आगू कहैत लाजो लगैत अछि।

नारद से की ?

यमराज संकेते सँ बूझि लेल जाओ मुनिश्रेष्ठ।

नारद *(स्मित हास्य दैत)* उपभोग करू धर्मराज, आब चलैत छी।

यमराज कालि दुपहरिया मे चित्रगुप्तक संग देवलोक आएब मंत्रणा करबा लेल।

(दूनूक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)

दृश्य 3

मंच सज्जा ओहिना, टेबुलक पाछू छओटा कुर्सी अर्धवृत्ताकार रूप मे लागल। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर लिखल अछि 'देवलोक', तीनू देव बीच मे बैसल छथि। अत्यधिक चिन्तित मुद्रा मे नारदक प्रवेश। प्रकाश क्रम सँ चारू कें आलोकित करैत अछि। तखन धीरे धीरे पूरा मंच आलोकित होइत अछि।

नारद नारायण, नारायण, सब सत्यानास भेल जा रहल अछि।

विष्णु पहिने आसन ग्रहण कएल जाओ मुनिश्रेष्ठ। *(नारद ब्रह्माक बगल मे कुर्सी पर बैसैत छथि)* बहुत चिन्तित देखैत छी। किछु विशेष बात ?

नारद देव लोकनि, मोन हेबे करत किछु दिन पूर्व यमराज दूटा मृतात्माक सम्बन्ध मे एकटा विचित्र प्रस्ताव अनने छलाह। हम सब ओहि मृतात्मा कें मर्त्यलोक सँ किछु सामान अनबाक स्वीकृति दऽ देने छलियै।

महेश हँ, ओ प्रस्ताव तऽ सर्वसम्मति सँ पास भेल छलैक।

नारद ठीक, मुदा जेना हम कहने छलहुँ, ओहि सामान कें हम सब चीन्हि नहि सकबैक। ओहि मे की छलैक आ ओकर देवलोक पर की प्रभाव हेतैक से एखनहुँ हम नहि बुझैत छी मुदा किछु अप्रत्याशित घटना घटि रहल अछि जरूर।

विष्णु कने फरिछा कए कहू।

नारद ओहि मृतात्माक एलाक बाद ओकरा सब कें अग्निकुण्ड पठा देल गेलैक। मुदा ताहि सँ पहिने ओ सब बन्द घर मे स्नान केलक।

ब्रह्मा यमलोक मे आबि मृतात्मा बन्द घर मे स्नान केलक ! आश्चर्य घटना जे कहियो नहि भेल छल।

नारद ओतबे नहि, तकर बाद आबि कए यमराज आ चित्रगुप्त कें एकटा पैकेट उपहार देलकनि। ओ उपहार केहन छलैक से तऽ हुनके सब सँ सूनब।

महेश ओ दूनू गोटे उपहार राखि लेलनि ? कने बएन एम्हरो पठा दितथि तऽ हमहूँ सब स्वाद चिखितहुँ।

नारद कने दम धरू उमापति, ओ दूनू आबिए रहल छथि। ओतबे नहि, ओ सब अग्निकुण्ड मे जेबा काल सेहो किछु नाटक केलक।

विष्णु अच्छा ?

नारद एकरो विस्तृत वर्णन हुनके सब सँ सूनब। मुदा हम कालि यमलोक मे बड़ अजगुत देखल।

महेश खिस्सा बहुत रोचक बनि रहल अछि, कने फरिछा कए कहियौ देवर्षि।

नारद कालि ओहिना उत्सुकतावश यमलोक गेल छलहुँ जे यमराज सँ ओहि दूनू मृतात्माक हालचाल पूछी। ओतए जे देखल से अविश्वसनीय छल।

ब्रह्मा एहन की देखलियै मुनिश्रेष्ठ ?

नारद जखन हम प्रवेश कएल तऽ देखल जे यमराज सँ कोनो दूटा अदृश्य आत्मा गप कऽ रहल अछि। ओ सब प्रकट नहि होमए चाहैत छल। ओ हमरो चिन्हैत छल।

विष्णु अपने कें तीनू लोक मे के नहि चिन्हत देवर्षि ?

नारद से बात नहि चक्रपाणि, हम जखन मर्त्यलोक गेल रही तखन छद्मवेश मे। तकर बाद हाल मे एक बेर फेर गेल छलहुँ मुदा किछु विशेष कार्य सँ जाहि मे ककरो सँ भेंट करबाके नहि छल।

महेश चुपेचुपे एतेक मर्त्यलोक भ्रमण किएक देवर्षि ?

नारद ओ खिस्सा बाद मे कहब। एखन तऽ बूझि लेल जाओ जे ओ दूनू मृतात्मा मर्त्यलोक सँ लगातार सम्पर्क बनौने रहैत अछि।

ब्रह्मा यमलोक मे अग्निकुण्ड मे पड़ल आत्मा कोना मर्त्यलोक सँ सम्पर्क बना सकैत अछि ? ई तऽ अबूझ पहेली भेल मुनिश्रेष्ठ।

नारद वैज्ञानिक प्रगति जे हम देखल ताहि सँ ई सम्भव छैक चतुरानन। मुदा ओ बात एखन कात रहए दियौक। सूनू यमलोकक खिस्सा।

महेश सुनबा लेल व्यग्र भेल छी देवर्षि।

नारद ओ दूनू अदृश्य आत्मा हमरा दूनू कें बहुत डरा धमका देलक। यमलोकक वर्तमान स्थितिक ओ सब पूर्ण जानकारी रखने छल जेना पूरा इलाका मे ओ सब घुमैत रहल होअए।

ब्रह्मा कुण्ड मे पड़ल आत्मा कोना बाहर आबि गेल, कोना समूचा इलाका घूमि लेलक ? कुण्ड मे पहरा नहि छलैक ?

नारद से तऽ यमराज सँ पूछि लेब प्रजापति। एतेक जरूर जे ओ सब जाहि तर्कें बाजि रहल छल से सब ओहिना नकारल नहि जा सकैत छलैक। ओकरा तर्क मे औचित्य छलैक आ सब बात मर्त्यलोकक आधुनिक वैज्ञानिक विकासक अनुभव सँ प्रेरित छलैक।

विष्णु की मानव सत्ते देवलोकक विजय अभियानक तैयारी कऽ रहल अछि ? *(महेश दू बेर डमरू बजा दैत छथि, जेना कोनो युद्धक बिगुल होए)*

नारद तेहन सन तऽ नहि लगैत अछि। देवलोक ओकरा सब लेल कोनो चैलेंज नहि छैक। ओ सब तऽ ब्रह्माण्डक अन्यान्य ग्रह नक्षत्र पर पहुँचिए गेल अछि। आ अन्य ब्रह्माण्ड पर जेबाक तैयारी मे लागल अछि।

(*चित्रगुप्तक संग यमराजक प्रवेश)*

यमराज त्रिमूर्ति कें हमर दंडवत प्रणाम स्वीकार हो।

विष्णु अबैत जाउ, आसन ग्रहण करैत जाउ *(कुर्सी दिस इशारा करैत, यमराज, चित्रगुप्त दूनू कातक कुर्सी पर बैसैत छथि, चित्रगुप्त अपन खाताबही टेबुल पर रखैत छथि)* कहल जाए धर्मराज, कोन विशेष प्रयोजन सँ एखन उपस्थित भेलहुँ ?

यमराज विशेष प्रयोजन भेल यमलोक मे घटैत किछु विचित्र घटना सँ देवलोकनि कें अवगत कराएब आ शिथिल होइत प्रशासन पर किछु चर्चा।

महेश आ मर्त्यलोकक उपहारक चर्चा नहि करबै ?

यमराज पहिने चित्रगुप्त महाराज सँ हुनकर अनुभव सूनि लेल जाओ देवलोकनि।

विष्णु सुनबा लेल तैयारे छी।

चित्रगुप्त खिस्सा ओहि दू विचित्र मृतात्मा सँ सम्बन्धित अछि। ओ दूनू अपना पेटी मे डायरी जकाँ एकटा यंत्र अनने छल जाहि मे अपन सब कुकृत्यक विस्तृत विवरण लिखने छल। आ से एहन नीक ढंग सँ जे ओकरा देखिते हमरा अपना लूरि पर लाज होमए लागल।

ब्रह्मा *(आश्चर्य प्रकट करैत)* से की ? अपने सन लेखाकार तीनू लोक मे नहि अछि तखन ओहि मर्त्यलोकक अदना जीव एतेक कोना सीखि लेलक ?

चित्रगुप्त हमरहु एकर उत्तर नहि भेटल अछि प्रजापति। एकेटा सम्भावना अछि – युग युग सँ हम सब शिथिलताक शिकार भेल छी। कहलनि ओहि दिन महादेव ठीके जे हम सब मानि बैसल छलियै सब लूरि मे सर्वोत्तम छी आ नव किछु कतहु भैए नहि सकैत छैक। ओही प्राचीन पद्धति कें कनहा पर टगँने हम सब एतए बैसि अपना अभिमान मे डूबल रहलहुँ आ धरती पर ई तेज बुद्धि बला मानव जाति की की ने विकसित कऽ लेलक।

विष्णु वैज्ञानिक आविष्कारक किछु झाँकी तऽ नारदमुनि देखि आएल छथि मुदा लेखाकृति मे सेहो एतेक प्रगति भऽ गेलैक ई नव सूचना भेल। एहि सँ अपने कें चिन्तित हेबाक कोन काज ? ओ हमरा सब कें चैलेंज तऽ नहिए करत।

चित्रगुप्त से बात नहि, मुदा विकसित सभ्यता सँ डर तऽ हेबाके चाही ने चक्रपाणि। नित्यप्रति ओहि मृतात्माद्वय लऽ कए कतेको अजगुत बात भऽ रहल अछि जे पहिने कहियो नहि देखने छलियैक।

ब्रह्मा से तऽ ठीके, किछु नारदमुनि एखनहि सुना देलनि। मुदा हम धर्मराज सँ पुछैत छिएनि जे कुण्ड मे पड़ल आत्मा बाहर कोना आबि गेल आ समूचा इलाका मे टहलि लेलक। ओतए पहरा देनिहार की करैत छल ?

यमराज कुण्ड मे दूनू मृतात्मा पड़ले अछि प्रजापति। हमरा सबहिक प्रशासन मे कतहु कोनो ढिलाइ नहि भेल अछि। हम सब किछुओ नहि बूझि रहल छी जे ओहि सँ अलग दूटा अदृश्य मृतात्मा कोना आबि गेल।

विष्णु किछु मथदुक्खी जरूरे अनलक अछि ई घटना सब। एकर जाँच पर विचार हेतैक। अपने किछु प्रशासनिक चर्चा करए चाहैत छलहुँ धर्मराज।

यमराज यमलोकक प्रशासन मे शिथिलता आबि रहल अछि देव।

ब्रह्मा धर्मराज सन न्यायप्रिय शासक आ चित्रगुप्त सन लेखाकारक अछैत ई शिथिलताक चर्चा किएक ?

यमराज प्रशासन मे शिथिलता आबि रहल अछि चतुरानन कारण युग परिवर्तनक संग हमरा लोकनिक न्याय व्यवस्था परिवर्तित नहि भेल। हम सब कलियुगक उत्तरार्द्ध मे आबि गेल छी आ व्यवस्था सतयुगे बला रखने छी।

महेश *(डमरू बजबैत)* एकदम ठीक, हम तऽ कहब जे व्यवस्था शीघ्र बदलब परम आवश्यक।

यमराज दूटा बात पर ध्यान देल जाओ प्रभो —एक तऽ भेल यमलोकक आकार। यमलोक कें जे जमीन आबंटन भेल से सतयुग मे। ओहि समय पातकीक संख्या न्यून छल। तें यमलोक कें कम हिस्सा भेटलैक।

ब्रह्मा ई तऽ ठीक मुदा आब एहि मे कोना संशोधन सम्भव छैक ?

यमराज आजुक तारीख मे यमलोक मे आबऽ बलाक संख्या हजारो गुणा बढ़ि गेल अछि, संगहिं पापक जे परिभाषा हम सब रखने छी ताहि अनुसार ओकरा सबकें यमलोक मे बहुत दिन तक रहए पड़ैत छैक। फल ई भेलैक जे यमलोक मे सब कुण्ड मे मृतात्मा सब ठूसल रहैत अछि। बहराइत अछि एकटा आ आबि जाइत अछि दशटा।

चित्रगुप्त धर्मराज ठीके कहैत छथि। हमरहु एहि स्थिति लऽ कए बेस चिन्ता रहैत अछि।

विष्णु अपनेक की सुझाव ?

महेश हमर तऽ विचार जे देव लोकनिक लेल एक एक बीघा जमीन राखि देवलोकक बाँकी सबटा जमीन यमलोक कें दऽ देल जाए।

यमराज भोलेनाथ तऽ सब दिन क्रान्तिकारी प्रस्ताव दैत रहलखिन। मुदा हमरा ओतेक नहि चाही। अपने सब कष्ट मे रहब से हमरा कोना नीक लागत ? हम कोना कैलास पर्वत आ क्षीर सागर पर कब्जा जमाउ ? तहिना सब देव अपन फैल आवास राखथु। सुविधानुसार जे बचए से यमलोकक नाम आबंटन कऽ दियौक।

ब्रह्मा मुदा एहि मे एकटा पैघ समस्या छैक —देवलोकक जमीन यमलोक कें दइयो देल जेतैक तऽ कोनो मृतात्मा ओहि भूभाग पर पैर कोना देत ? ई तऽ नियमक विरुद्ध हेतैक।

महेश तें ने हम कहैत छी पहिने नियम कें बदलू।

विष्णु ओहि भूखंड कें यमलोकक भाग घोषित कऽ देला पर मृतात्मा सब रहि सकताह मुदा कतेक जमीन चाही ?

यमराज जतेक बिन काजक जमीन हो यथा बंजर, बलुआह, चट्टान, चऽर चांचर, सघन जंगल आदि जकर देवलोक मे कोनो उपयोग नहि छैक।

महेश हमरा तऽ ई प्रस्ताव अति उत्तम लागल। जखन ओ सब अनुपयोगी जमीन लेबा लेल तैयार छथि तखन हर्जे की ?

विष्णु हमरा ई प्रस्ताव मंजूर अछि।

ब्रह्मा अनुपयोगी जमीन लेल हमरो स्वीकृतिए बूझल जाओ।

यमराज बहुत कृपा केलिऐ देव लोकनि। ई समस्या एतेक सुगमता सँ निपटि जाएत से हमरा अन्दाज नहि छल। आब हमर दोसर प्रस्ताव सुनू।

विष्णु कहियौ, हम सब तऽ बैसले छी ओही लेल।

यमराज जहिना जमीन आबंटन सतयुग मे भेला सन्ताँ कलियुग अबैत अबैत असंतुलन भऽ गेलैक तहिना पाप आ धर्मक परिभाषा सेहो प्राचीन भऽ गेलैक। पृथ्वी पर मानव समाज मे बहुत परिवर्तन एलैक। राजा, जकरा लोक इन्द्रक अवतार बुझैत छल, से सबतरि हटि गेलाह। लोक अपन शासन चलेबा लेल प्रतिनिधि सब चुनलक।

ब्रह्मा मुदा कर्म तऽ ओएह करैत रहल, हत्या, बलात्कार सब समय पाप रहबे करतैक।

नारद सतयुग आ कलियुगक युगधर्म अलग अलग छैक देवगण।

यमराज पुरान व्यवस्था मे यमलोक मे जे विभिन्न कुण्डक विधान छल ताहि हिसाबें नवका कुण्ड सब जे बनाओल जाएत ताहि लेल सामान सब कतए सँ आओत ? सूनल अछि जे मर्त्यलोक मे वैज्ञानिक लोकनि नव नव अनुसंधान द्वारा मल मूत्र आदि सँ बहुत उपयोगी पदार्थ बना रहलाह अछि तें यमलोक कें ओकर बिक्री आब नहि होएत।

नारद धर्मराज ठीके कहैत छथि। ओतबे नहि मनुष्य एहन आविष्कार केलक अछि जे अपन प्रतिरूप एतए पठा देत जकरा पर शीत, ताप, गंदगी आदिक कोनो असरे नहि हेतैक।

महेश देखू, हम पहिनहुँ कहने छलहुँ, आइयो कहैत छी जे देवलोक मे जड़ता आबि गेल छैक। परिवर्तन सृष्टिक नियम छिऐक। जहिना ठाढ़ जल शनैः शनैः दूषित भऽ जाइत छैक तहिना नियम कानून सेहो बेसी पुरान भेला पर बेकार भऽ जाइत छैक।

नारद मर्त्यलोक मे तऽ संविधान संशोधन चलिते रहैत छैक।

विष्णु बात बुझलहुँ, एहू दिशा मे कार्य हेबाक चाही।

महेश हम तऽ कहब जे वर्तमान विधान कें तत्काल प्रभाव सँ स्थगित कऽ देल जाओ, नव विधान बनेबा लेल गणेश अथवा कार्तिकक अध्यक्षता आ चित्रगुप्त महराजक सचिवत्व मे एकटा कमेटी बनए जे नव नियमक संग संविधान प्रस्तुत करथि। धर्मराज अपने विशेष सलाहकार रहता।

ब्रह्मा नव संविधान बनेबाक लेल समय सीमा निश्चित हेबाक चाही ने उमापति।

महेश देखियौ, एतेक युगक बाद पहिल बेर नव संविधान बनाओल जा रहल छैक। पृथ्वी पर जतेक वैज्ञानिक विकास भेलैकए ताहि हिसाबें अपराधो के नव नव रूप आएल हेतैक। संगहि ओहि मे ब्रह्माण्डक अन्य ग्रह आदि पर कएल गेल अपराध सेहो जोड़ए पड़तैक कारण मनुष्य आब सबतरि पहुँचि गेल अछि। एतेक पैघ काज लेल समय सीमा कोना निर्धारित करबै प्रजापति ?

नारद नव विधान लेल की स्वर्ग मे विराजमान पुरान विधि विशेषज्ञ सबहक सेवा नहि लेल जा सकैत अछि ?

ब्रह्मा जेना कि ?

नारद गाँधी, राजेन्द्र प्रसाद, अंबेदकर सन विधिवेत्ता सब जे छथि।

महेश जरूर जरूर, ओहने व्यक्ति सब सँ नव विधान वास्तव मे नव होएत। मात्र नव कलेवर नहि, नव आत्मा सेहो। हम तऽ कहब जे एकाध वैज्ञानिक कें सेहो राखि लेल जाए जे मर्त्यलोक मे भेल वैज्ञानिक विकास सँ परिचित होथि।

विष्णु ठीके कहलहुँ। वैज्ञानिक जगदीश चन्द्र बसु महोदय बैसले रहैत छथि।

चित्रगुप्त पुरना नियम स्थगित रहबाक अवधि मे यमलोकक प्रशासन कोना चलए ?

महेश हमरा विचारें धर्मराज कें विशेषाधिकार देल जाए, ओ स्वयं निर्णय लेथि जे कोन हिसाबें मृतात्मा सब कें रखताह आ कि छुट्टी दऽ देथिन।

विष्णु बेस, इहो प्रस्ताव पासे बूझल जाओ। दू तीन दिन मे सब सदस्य लोकनि सँ सहमति लऽ कए नव कमेटीक घोषणा कऽ देल जाएत। धर्मराज अपन विशेषाधिकार एखनहि सँ प्रयोग करथु। आर किछु ?

यमराज नहि देव, हमर सब समस्याक समाधान भऽ गेल।

महेश आहि रे बा ! उपहारक चर्चा तऽ करबे नहि केलियै कियो ?

यमराज ओ उपहार कोनो नैवेद्य मिष्टान्न नहि छल भोलेनाथ जे बएन पठबा दितहुँ। कालि ओकरा बारे मे नारदमुनि कें बताइये देने छलिएनि। हुनके सँ बूझि लेब।

नारद स्पष्टे कहियौ ने सूर्यपुत्र जे मर्त्यलोक सँ एकटा मसीनी पुतरा आएल अछि जे स्वर्गलोकक सब अप्सरा कें नोरी बना कए रखबाक गुण रखैत अछि। अपन एक मधुर सम्भाषण सँ कोनो तपस्वीक तपस्या भंग करबा मे समर्थ अछि। ठीक छैक ने चित्रगुप्त महाराज ?

चित्रगुप्त अपने बुझिए गेलियैक तऽ आब बेसी की कहल जाए ?

महेश बर बेस, सुख भोग करू दूनू गोटे।

(दर्शक दीर्घाक अढ़ सँ रंगबिरंगी लेजर प्रकाश हॉल मे फेकल जाइत अछि, ओकर रूप सेहो क्षणे क्षणे बदलैत रहैत छैक, ई लेजर ओहने छैक जेहन नारद वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला मे देखने छलखिन। तखने ओहिना अढ़ सँ एकटा छोट ड्रोन उड़ाओल जाइत छैक जे किछु काल तक दर्शकक बीच उड़ैत रहै अछि। नेपथ्य मे विमान उड़बाक जोर सँ ध्वनि होइत छैक। महेश उठि कए डमरू बजबैत खुसी सँ नाचए लगैत छथि।)

विष्णु सुदूर मे ई कोन विचित्र प्रकाश देखल हम सब ? आ एतेक जोर आवाज बला चिड़ै सेहो पहिले बेर देखि रहल छी।

नारद इएह दूनू खेला हम ओहि वैज्ञानिक के प्रयोगशाला मे देखने रही। मुदा ई देवलोक मे कोना पहुँचि गेल से नहि बुझा रहल अछि। जरूर ओहि वैज्ञानिक के बदमासी छी हमरा सब कें बुझबै लेल जे ओ सब वास्तव मे ब्रह्माण्डक कोनो भाग मे जा सकैत अछि।

महेश *(ठाढ़े ठाढ़)* जिन्दाबाद, जिन्दाबाद, मर्त्यलोकक मानव आविष्कार जिन्दावाद। *(बैसि जाइत छथि)*

ब्रह्मा हँसी ठट्ठा नहि बुझियौ महेश्वर, कने सीरियस होउ। देवलोक पर बहुत पैघ खतरा आबि गेल अछि। हमर तऽ विचार होइत अछि जे भगवती दुर्गा कें आह्वान कएल जाए आ मानव जातिक नाश कएल जाए। ई विचार हम बहुत कष्टें देल अछि कारण बुझले अछि मानव हमर अप्रतिम सृजन अछि आ हमरा सबसँ बेसी प्रिय।

महेश चतुरानन, सत्ते अहाँ सठिया गेलहुँ अछि। मानव सँ अराड़ि लेब तऽ पूजा के करत? हम अहाँक पूजा करब आ अहाँ हमर तै सँ चुलहा कोना पजरत ? छप्पन प्रकारक भोगक आदति जे लागि गेल अछि से कतऽ सँ आओत ? देवलोकक छहरमहर दुइये दिन मे खतम भऽ जाएत आ तकर बाद ठनठनगोपाल।

नारद हमर कहब दोसर अछि। कोनो अभियान सँ पूर्व शत्रुक सबटा सैन्यशक्तिक पता लगा लेबाक चाही।

विष्णु से तऽ ठीके। दोसर बात जे देवी महिषमर्दिनी कतोक युग सँ युद्ध मे नहि गेलीह अछि। हुनको अस्त्र शस्त्र आब बिझा गेल हेतनि।

महेश मानव सँ युद्धक विचार त्यागिए देल जाए सएह होएत बुधियारी। आब कतेक दिन हम सब ओकरा ठकबै ?

विष्णु देखल जेतैक, एखन मीटिंग समाप्त भेल, सब गोटे अपन अपन घर चली। *(सबहक प्रस्थान, प्रकाश बन्द)*

दृश्य 4

मंच सज्जा मे कोनो परिवर्तन नहि, डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर आब 'यमलोक' लीखल छैक। यमराज आ चित्रगुप्त कुर्सी पर बैसल छथि। मंच आलोकित होइत अछि।

यमराज कालि दरबार मे भेल निर्णय यमलोक आ देवलोकक इतिहास मे अभूतपूर्व रहल महालेखाकार। हमर विचार अछि जे अपन विशेषाधिकारक प्रयोग करैत सबटा मृतात्माक नरक भोग शेष कऽ दी आ हुनका लोकनि कें आगूक योनि मे पठेबाक आदेश दऽ दी। आब एक साल तक कोनो नव मृतात्मा कें यमलोक अबैक काजे नहि, सोझे अगिला जन्म मे चलि जेताह। यमलोक खाली भऽ जाएत।

चित्रगुप्त अति सुन्दर विचार, हमरो काज किछु हल्लुक होएत धर्मराज। ओना हमरा फेर नव विधान बनेबा लेल व्यस्त रहहिं पड़त मुदा ओ नव अनुभव होएत तें ओहि कार्यक प्रति हम बहुत उत्सुक छी।

यमराज हम अपनेक सफलताक कामना करैत छी देव।

(रमेश आ सुरेशक प्रत्यक्ष रूप मे प्रवेश, दूनू यमराज आ चित्रगुप्त कें प्रणाम करैत छथि)

चित्रगुप्त *(दूनू कें देखि आश्चर्यचकित होइत)* हिनका दूनू कें तऽ अग्निकुण्ड पठा देल गेल छल, फेर एतए कोना ? की हिनका सब कें छुट्टी भेटि गेलनि धर्मराज ?

यमराज छुट्टी हम तऽ नहि देलिएनि, एखन घोषणा भेलैक कहाँ ? ई तऽ कोनो माया लगैत अछि।

सुरेश माया तऽ राक्षस करैत अछि देव। मर्त्यलोकक मानव मात्र वैज्ञानिक अनुसंधान करैत अछि। समय आबि गेलैक जे सबटा रहस्योद्घाटन कऽ दी।

रमेश नव आविष्कारक लूरि सँ हम दूनू अपन साइबोर्ग प्रतिरूप तैयार कएल। स्नानघर मे गेलाक बहन्ने हम सब ओहि प्रतिरूप कें बहार कऽ देल जे एखनहुँ अग्निकुण्ड मे पड़ल अछि देव। तकरा बाद एकटा अदृश्य पोशाक पहिरि हम दूनू बहरेलहुँ आ सबतरि घुमैत रहलहुँ।

सुरेश बेर कुबेर जे अपने अदृश्य आवाज सुनलियै देव से हमरे दूनूक छल। अदृश्य पोशाक सेहो मर्त्यलोकक वैज्ञानिक आविष्कारे छैक देव।

यमराज अच्छा तऽ एही लेल ओ पेटी संग लेने एलियै अहाँ सब ?

रमेश ठीके बुझलियै धर्मराज। आब सब बात स्पष्ट भऽ गेल ने देव ?

यमराज हँ, बहुत नीक। खुशीक बात जे अन्त मे एहि नाटक सँ यमलोक मे सुधार करबाक काज शुरू भऽ सकल।

चित्रगुप्त उचित समय पर रहस्यक सब बात फरिछा गेल से बहुत नीक बात।

रमेश महाराज वैवस्वत, हमर निवेदन जे अपन विशेषाधिकारक प्रयोग करैत हमरा दूनू कें मर्त्यलोक आपस पठा देल जाए आ हमर जे प्रतिरूप अछि तकरा एतहि अपना सेवा मे लगा देल जाओ। हमरा सब कें यमलोकक नवनिर्माण करबाक अछि धर्मराज।

सुरेश एकदम मॉडर्न क्न्सट्रक्सन महाराज औदुम्बर, जाहि लेल मर्त्यलोक सँ नवका मसीन सब आनए पड़त, विशेष वस्तु सब आनऽ पड़त, रोबोट मजदूर पठबए पड़त। एतए हमर प्रतिरूप सबटा कार्यसंचालन देखत आ मर्त्यलोक सँ सामान सप्लाइक व्यवस्था हम दूनू देखबैक।

यमराज एवमस्तु।

रमेश एकटा आर सुझावक धृष्टता करैत छी देव, यदि अनुमति हो तऽ कही।

यमराज जरूर कहू।

सुरेश नव संविधान बनेबा सँ पहिने चित्रगुप्त महराज कम्प्यूटर सीखि लेथि तऽ उत्तम होइत। कम्प्युटर हम पठा देब, हमर प्रतिरूप हुनका एतहि सब किछु सिखा देतनि। आधुनिक युग मे बिना कम्प्यूटर के लेखाकृतिक कल्पनो नहि कएह जा सकैत छैक देव।

रमेश हमरा सबहिक अभिलाषा अछि जे नवका यमलोक अत्याधुनिक तकनीकक प्रदर्शनी स्थल बनए।

चित्रगुप्त अभिलाषा जरूर पूर होएत।

यमराज कतए सँ कतए हम सब पहुँचि गेलहुँ। धन्य कही मानव जातिक वैज्ञानिक विकास कें।

चित्रगुप्त चली हम सब देवलोक मे सब बातक रहस्योद्घाटन कऽ दिएनि।

यमराज संगहि ईहो बुझा दिएनि जे एहि सब घटना मे मानव जातिक कोनो द्वेषभाव नहि छलैक। ओ तऽ यमलोक मे सुधार करबा लेल ई व्यूह रचल गेल छल।

रमेश आ सुरेश दूनू देव कें प्रणाम करैत छथि, दूनू देवक प्रस्थान। रमेश आ सुरेश विजय मुद्रा मे, अति प्रसन्न भेल हाथ सँ V चिन्हक प्रदर्शन करैत दर्शक दिस मंच पर आगू आबि जाइत छथि।

रमेश *(दर्शक दिस घुरि)* अपने सब बुझिए गेलियै जे हमरा दूनूक एहि विशेष अभियानक उद्येश्य छल नरक विजय। अभियान सफल भेल। आब नरक मे कोनो मृतात्मा नहि रहताह आ ने एखन कियो ओतए जेताह। हम दूनू गोटे धरती पर घुरि रहल छी। ई विज्ञानक चमत्कारे छल जाहि सँ हम सब यमलोक मे सुधार करबा सकलहुँ।

सुरेश वैज्ञानिक अनुपम अमितक सहयोग सँ हम दूनू साइबोर्ग प्रतिरूप बनौनाइ आ रोबोट एसेम्ब्ली सीखल। हुनके प्रयासें अदृश्य होइबला कपड़ा लेल। यमराज आ चित्रगुप्त कें जे उपहार देलिएनि से रोबोट अप्सरा छल। बाँकी बात तऽ अपने सब सुनिये लेलियै।

(तखनहि वैज्ञानिक अनुपम अमितक प्रवेश)

वैज्ञानिक *(दर्शक दिस देखि)* चमत्कार देखू जे आब हम अपन विशेष यान सँ दूनू शिष्य रमेश आ सुरेश कें अभियानक सफलता पर बधाइ देबा लेल सशरीर यमलोक पहुँचि गेलहुँ। *(रमेश, सुरेश हुनका पएर छूबि प्रणाम करैत छनि, ओ दूनू कें छाती सँ लगा पीठ थपथपबैत छथि)* हमरा आशा नहि छल जे अहाँ दूनू गोटे एतेक नीक तरहें अभियान कें सफल बनाएब।

रमेश सब अपनेक सहयोग सँ सम्भव भेलैक सर।

सुरेश अभियानक सफलताक पूरा श्रेय अहीं के अछि सर।

रमेश अपने हमरा सब कें बीस सालक पापक प्रायश्चित्तक गप कहने रहियैक से स्मरण होएत सर।

सुरेश आब ओ अभिनव योजना बताइये दी।

रमेश देवलोक सँ काटि छाँटि कए यमलोक कें बहुत रास नवका जमीन भेटलैक अछि। सबटा पुरना यातनाकुण्ड सब नष्ट कऽ कए रोबोट मजदूर द्वारा पूरा यमलोकक नवनिर्माण हेतैक।

सुरेश बुझले अछि प्राकृतिक सौन्दर्यक हिसाबें यमलोक आ स्वर्गलोक समाने छैक। यमलोकक कलंक छैक इएह नरक कुण्ड सब। एकरा नष्ट कऽ कए मानव द्वारा डिजाइन कएल तरीका सँ पुनर्निर्माण केला पर यमलोक स्वर्गलोक सँ बेसी सुन्दर भऽ जेतैक।

रमेश एहि निर्माण लेल मर्त्यलोक सँ मसीन आ सामान सप्लाइ कएल जेतैक। ओकरे निर्यात कम्पनी हम सब खोलबैक।

सुरेश संगहि यमलोक आब अपना ब्रह्माण्डक नवका टूरिस्ट स्थल बनतैक, ताहि लेल हम सब एकटा ट्रैवेल कम्पनी सेहो खोलबैक। ई दूनू कम्पनी पृथ्वी पर चलैत एखनुक कम्पनी सँ अलग हेतैक। आब एहि मे कोनो बेइमानीक काज नहि हेतैक ने कोनो राजनेता कें हिस्सा देल जेतनि। हम सब आब कोनो नवका पापक भागी नहि बनब। हमरा दूनूक पुनर्जन्म भेल अछि।

रमेश बेस पैघ व्यवसाय छैक, बहुत लोक कें नोकरी भेटतैक। एहि मे प्राथमिकता भेटतनि ओहि व्यक्ति कें जिनकर परिवार कें हमरा दूनूक हाथें कोनो तरहक क्षति भेल छलनि। इएह होएत हमरा सबहिक प्रायश्चित्त।

वैज्ञानिक नीक विचार। सरकारो एहि सँ बेसी नहिए करितैक।

सुरेश आर एकटा नव बात सर। पाप पुण्यक नव व्याख्या हेतु एकटा संविधान सभा बनाओल गेलैक अछि जाहि मे चित्रगुप्त सचिव रहताह आ स्वर्गलोक मे बैसल एतुका भूतपूर्व विधिवेत्ता आ वैज्ञानिक सबके सेवा सेहो लेल जाएत। नवका विधान बनबाक अवधि मे यमलोक मे ताला लगा देल गेलैक अछि। कोनो समय सीमा नहि।

रमेश देवता लोकनिक आदेश सँ पृथ्वी पर सेहो वर्तमान शास्त्र पुराणक चर्चा बन्द करबा देल जाएत। नवका विधान बनलाक बाद मर्त्यलोक मे पंडितगण सबटा शास्त्र पुराण फेर सँ लिखताह। एहि मध्य एखनुक पोथा सब कें कोन-कान दोग-दाग सँ ताकि कए जमा करथु आ जरबैक व्यवस्था करैत जाथु।

वैज्ञानिक ई तऽ सबसँ नीक काज होएत।

(तखने नारदजीक संग ब्रह्मा, विष्णु, महेश, यमराज, चित्रगुप्त आ दूनू यमदूतक प्रवेश। सुरेश, रमेश देव लोकनि कें प्रणाम करैत छथि।)

वैज्ञानिक देखियौ, हम एखनहि देवलोक जेबा लेल तैयार छलहुँ आ एतए देवलोके पहुँचि गेल।

नारद *(वैज्ञानिक कें सम्बोधित करैत)* वैज्ञानिक अनुपम, जरूर अहाँ ब्रह्माण्ड मे कतहु जा सकैत छी। हमरा आब पूर्ण विश्वास अछि। मर्त्यलोकक वैज्ञानिक चमत्कारक कतबो प्रशंसा कएल जाए, कम होएत। हम जरूर पहिल बेर अपनेक कक्ष मे किछु जासूसी करए गेल छलहुँ मुदा धन्य अछि अहाँक तन्त्र जे हमर सब चेष्टाक काट ताकि लेलक। *(रमेश, सुरेश दिश घुरि, पीठ थपथपबैत)* अहाँ दूनू बहुत साहसिक काज केलहुँ। अगिला चरण लेल हमर आशीर्वाद।

विष्णु *(वैज्ञानिक सँ हाथ मिलबैत)* हम पहिल बेर एहन गुणी सँ भेंट कऽ रहल छी। समस्त देवलोक अपने सबहिक कार्य पर गौरवान्वित अछि।

ब्रह्मा आइ हम अपन अप्रतिम कृति मानव पर गौरवान्वित छी। हमर कामना जे स्वर्ग नरकक भ्रमजाल सँ मुक्त मानव एहिना वैज्ञानिक विकास करैत रहए आ समस्त ब्रह्माण्ड पर राज करए।

महेश मर्त्यलोकक विज्ञान विकसित होइत रहए आ हमहूँ सब ओहि सँ लाभान्वित होइत रही सएह हमरा सबहक कामना। जय विज्ञान।

महेश जोर सँ डमरू बजबैत छथि। सब देवगण वैज्ञानिक सँ हाथ मिलबैत छथि। वैज्ञानिक बीच मे, हुनक दूनू कात सुरेश आ रमेश, बामा कात नारद, यमराज आ चित्रगुप्त, दहिना कात ब्रह्मा विष्णु महेश ठाढ़ होइत छथि। आगू मे दूनू यमदूत नचैत छथि आ गबैत छथि-

यमलोकक काज सँ छुट्टी भेटल
दिन राति दौड़ए नहि पड़त
मर्त्य लोक आब बिसर रहल छी, बिसरि रहल छी।

प्रकाश धीरे धीरे कम होइत अछि, पटाक्षेप